सान्ध्य हिन्दी दैनिक
जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 02 | अंक - 172 | जौनपुर, सोमवार, 18 मार्च 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

सीएए के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में एक बार फिर दायर हुई याचिका

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट में एक नई याचिका दायर कर नागरिकता (संशोधन) नियम, 2024 के कार्यान्वयन पर रोक लगाने की मांग की है। याचिका में यह तर्क दिया है कि यह अधिनियम भेदभावपूर्ण, मनमाना और धर्म निरपेक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन है। केंद्र ने 11 मार्च को प्रासंगिक नियमों की अधिसूचना के साथ नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 के कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त किया था। इस अधिनियम के जरिये 31 दिसंबर, 2014 से पहले पड़ोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के गैर–प्रवासी मुस्लिमों को तेजी से भारतीय नागरिकता दी जाएगी।

राज्य सरकार ने सीएए नियमों को असंवैधानिक करार देते हुए कहा कि धर्म और देश के आधार पर वर्गीकरण भेदभावपूर्ण, मनमाना, अनुचित है और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन है। याचिका में कहा गया, तथ्य यह है कि प्रतिवादी को 2019 अधिनियम के कार्यान्वयन में कोई तात्कालिकता नहीं है, 2024 के नियमों पर रोक लगाने के लिए पर्याप्त कारण है। यह कहते हुए कि सीएए मनमाना है, याचिका में कहा गया, धर्म और देश के आधार पर वर्गीकरण स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है। यह स्थापित कानून है कि किसी व्यक्ति के आंतरिक और मुख्य लक्षण के आधार पर भेदभाव करने वाला कानून एक समझदार अंतर के आधार पर उचित वर्गीकरण नहीं बना सकता है।

एनपीपी अरुणाचल प्रदेश में बीजेपी उम्मीदवारों का समर्थन करेगी – सीएम संगमा

गुवाहाटी, एजेंसी। मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड के. संगमा ने रविवार को कहा कि उनकी नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) अरुणाचल प्रदेश की दो लोकसभा सीट पर कोई उम्मीदवार नहीं उतारेगी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवारों का समर्थन करेगी। एनपीपी केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का हिस्सा है। संगमा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा, नेशनल पीपुल्स पार्टी ने अरुणाचल प्रदेश की दो लोकसभा सीट पर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है। राजग में साझेदार होने के नाते एनपीपी की राष्ट्रीय समिति ने अरुणाचल प्रदेश में राजग उम्मीदवारों का समर्थन करने का फैसला किया है और अपनी राज्य समिति को राजग उम्मीदवारों को समर्थन देने का निर्देश दिया है। संगमा के फैसले की सराहना करते हुए असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि राजग सहयोगियों की ऐसी प्रतिबद्धता सत्तारूढ़ गठबंधन के लिए लोकसभा चुनाव में 400 से अधिक सीट सुनिश्चित करेगी।

कांग्रेस की हालत इतनी खराब है कि सोनिया गांधी को भी राज्यसभा के रास्ते संसद जाना पड़ा – शिवराज

भोपाल, एजेंसी। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को कहा कि कांग्रेस की हालत इतनी बुरी हो गई है कि सोनिया गांधी जैसी नेता तक को संसद पहुंचने के लिए लोकसभा चुनाव लड़ने के बजाय "पिछले दरवाजे" राज्यसभा का सहारा लेना पड़ रहा है।

उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि राहुल गांधी की निर्णय लेने की क्षमता भ्रम से भरी है और कांग्रेस को लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवार नहीं मिल रहे। विदिशा से लोकसभा चुनाव लड़ रहे चौहान ने कहा, राहुल गांधी एक ऐसे कप्तान हैं, जो नहीं जानते कि क्या करना है और कब करना है। जब उन्हें चुनाव की तैयारी करनी चाहिए, तब वह यात्रा पर निकल जाते हैं, और जब उन्हें यात्रा पर निकलना चाहिये, तब वह विदेश चले जाते हैं। फिर हार के बाद वह ईवीएम को लेकर शोर मचाएंगे।'' चौहान

ने कहा, ''कांग्रेस के विचारशील नेता पार्टी की खराब हालत देखकर इसे छोड़ रहे हैं। एक के बाद एक चुनाव हारने के बाद हालात इतने खराब हो गए हैं कि सोनिया गांधी ने भी चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया और राज्यसभा के जरिए पिछले दरवाजे से एंट्री ले ली। अब कोई कल्पना कर सकता है कि उस पार्टी का क्या होगा, जिसके सर्वोच्च नेता का आत्मविश्वास डगमगा गया है। 2014 के बाद कांग्रेस 50 चुनाव हारी है, यहां तक कि 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी भी अमेठी से हार गए।

ईडी ने अरविंद केजरीवाल को भेजा समन

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने रविवार को एक नए मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पूछताछ के लिए बुलाया है। केजरीवाल को 18 मार्च को पूछताछ के लिए पेश होने को कहा गया है। ये मामला दिल्ली जल बोर्ड में कथित अनियमित ताओं से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग का है, जिसकी पूछताछ के लिए दिल्ली के सीएम को ईडी ने तलब किया है। बता दें, इससे पहले दिल्ली शराब नीति मामले में पूछताछ के लिए प्रवर्तन निदेशालय केजरीवाल को आठ बार समन भेज चुका है, जिनको अवैध बताते हुए दिल्ली सीएम एजेंसी के सामने पेश नहीं हुए हैं। सीबीआई द्वारा दर्ज की गई एक एफआईआर पर ईडी जांच कर रही है। इस एफआईआर के अनुसार, दिल्ली जल बोर्ड के पूर्व मुख्य इंजीनियर जगदीश कुमार अरोड़ा ने एनकेजी इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को 38 करोड़ रुपये का ठेका दिया था। ये ठेका विद्युत चुम्बकीय प्रवाह मीटरों की आपूर्ति, स्थापना और परीक्षण के लिए दिया गया था। एफआईआर में आरोप लगाया गया है कि एनकेजी इंफ्रास्ट्रक्चर ने जाली दस्तावेजों के आधार पर बोली हासिल की और अरोड़ा को इस तथ्य की जानकारी थी कि कंपनी तकनीकी पात्रता पूरी नहीं करती है।

एफआईआर में डीजेबी और एनबीसीसी के अधिकारियों ने रिश्वत लेकर अवैध रूप से एनकेजी इंफ्रास्ट्रक्चर को फायदा पहुंचाने का भी आरोप लगाया है। बता दें, इस मामले में ईडी ने 31 जनवरी को अरोड़ा और एक ठेकेदार अनिल कुमार अग्रवाल को गिरफ्तार किया था। ईडी दिल्ली जल बोर्ड मामले

में मनी ट्रेल की जांच कर रही है। ईडी ने आरोप लगाया है कि एनकेजी इंफ्रास्ट्रक्चर को गलत तरीके से कॉन्ट्रैक्ट देने के बाद अरोड़ा को नकद और बैंक खातों में रिश्वत मिली, जिसे उन्होंने विभिन्न पार्टियों को चंदे में दे दिया। इसमें आप पार्टी से जुड़े लोग भी शामिल हैं। ईडी के बयान के अनुसार, रिश्वत की रकम आप को चुनावी फंड के तौर पर भी दी गई थी। आप नेता और दिल्ली की मंत्री आतिशी ने ईडी के समन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, कोई नहीं जानता कि डीजेबी का यह मामला किस चीज को लेकर है। केजरीवाल को गिरफ्तार करने और उन्हें लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार करने से रोकने की एक वैकल्पिक योजना लगती है।

पीएम मोदी ने राष्ट्र को दी 8.25 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाएं

नई दिल्ली, एजेंसी। विकसित भारत के निर्माण की दिशा में प्रयासरत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस महीने केवल 14 दिनों में 8.25 लाख करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित की हैं, जो विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के निर्माण का रिकॉर्ड है। साल 2024 के 75 दिनों में 11 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन या शिलान्यास किया गया है। एक मार्च को प्रधानमंत्री मोदी ने झारखंड के धनबाद में 35,700 करोड़ रुपये और बंगाल के हुगली में आरामबाग में 7,200 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी थी।

बंगाल को मिली परियोजनाओं की सौगात

दो मार्च को प्रधानमंत्री ने बंगाल के नादिया जिले में 15,000 करोड़ रुपये और बिहार के औरंगाबाद में 21,400 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी। चार मार्च को प्रधानमंत्री ने तेलंगाना के आदिलाबाद में 56,000 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी। अगले दिन उन्होंने तेलंगाना के संगारेड्डी में 6,800 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित कीं।

ओडिशा में हजारों करोड़ की परियोजनाओं की घोषणा

इसके बाद पीएम ने ओडिशा में 19,600 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं की घोषणा की। छह मार्च को, प्रधानमंत्री ने मेट्रो रेल और क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) सहित कोलकाता में 15,400 करोड़ रुपये की कई कनेक्टिविटी परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।

असम के जोरहाट में 17,500 करोड़ की विकास परियोजनाएं

प्रधानमंत्री मोदी ने नौ मार्च को असम के जोरहाट में 17,500 करोड़ रुपये से अधिक विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी। अगले दिन, पीएम ने उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में 34,000 करोड़ रुपये से अधिक की विकास पहलों की आधारशिला रखी। इसके बाद 11 मार्च को प्रधानमंत्री ने हरियाणा के गुरुग्राम से देशभर में करीब एक लाख करोड़ रुपये की 112 राष्ट्रीय राजमार्ग परि योजनाओं की आधारशिला रखी।

अहमदाबाद में विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला

पीएम ने 12 मार्च को अहमदाबाद में डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर में 1,06,000 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी। पीएम मोदी ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपये की तीन सेमीकंडक्टर परियोजनाओं की भी आधारशिला रखी।

दिल्ली की सभी सात सीटों पर छठे चरण में 25 मई को मतदान

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में मतदान होगा। छठे चरण में 25 मई को दिल्ली की सभी सात सीटों पर वोट डाले जायेंगे। भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने शनिवार को यहाँ यह जानकारी दी। राष्ट्रीय राजधानी के सात संसदीय क्षेत्रों – चाँदनी चौक, उत्तर पूर्वी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, नई दिल्ली, उत्तर पश्चिम दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली में एक साथ 25 मई को मतदान होगा। दिल्ली में कुल 1.47 करोड़ मतदाता हैं जिनमें 67.5 लाख महिलाएँ और 80.09 लाख पुरुष हैं। मौजूदा लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को समाप्त हो रहा है। भाजपा ने अपनी दूसरी सूची में दो नए चेहरों हर्ष मल्होत्रा और योगेन्द्र चंदोलिया को क्रमशः पूर्वी और उत्तर पश्चिम दिल्ली से उम्मीदवार बनाया है। पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र के लिए भाजपा उम्मीदवार के रूप में नामांकित मल्होत्रा, पूर्ववर्ती पूर्वी दिल्ली नगर निगम के पूर्व मेयर हैं। इसी तरह, चंदोलिया, जिन्होंने उत्तर पश्चिमी दिल्ली से टिकट हासिल किया है, पूर्ववर्ती उत्तरी दिल्ली नगर निगम के पूर्व मेयर हैं। घोषणा के साथ, भाजपा का लक्ष्य अपनी अभियान रणनीति को फिर से जीवंत करना और संसद में राष्ट्रीय राजधानी का प्रतिनिधित्व करने के लिए नए नेतृत्व को पेश करना है।

बीजेपी शोर मचाती है लेकिन उसमें संविधान को बदलने का साहस नहीं है - राहुल गांधी

मुंबई, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को दावा किया कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ''शोर बहुत मचाती'' है लेकिन उसमें संविधान को ''बदलने'' का साहस नहीं है। राहुल ने यह भी कहा कि सच्चाई और देश की जनता उनके साथ है। भाजपा सांसद अनंतकुमार हेगड़े ने हाल में कहा था कि उनकी पार्टी को संविधान में संशोधन करने के लिए और ''कांग्रेस द्वारा इसमें जोड़ी गई अनावश्यक चीजों को हटाने के लिए'' संसद के दोनों सदनों में दो–तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी। इसके बाद भाजपा ने हेगड़े की टिप्पणियों से पैदा हुए विवाद को शांत करने की कवायद में इसे उनका ''निजी विचार'' बताया और उनसे स्पष्टीकरण मांगा था। राहुल गांधी मुंबई में महात्मा गांधी के आवास मणि भवन से अगस्त क्रांति मैदान तक 'न्याय संकल्प पदयात्रा' करने के बाद यहां एक सभा को संबोधित कर रहे थे।

अगस्त क्रांति मैदान में ही ब्रिटिश राज से आजादी के लिए भारत के संघर्ष के दौरान 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ था। उन्होंने कहा, ''भाजपा बहुत शोर मचाती है लेकिन उसमें संविधान को बदलने का साहस नहीं है। सच्चाई और लोगों का समर्थन हमारे साथ है। वायनाड से लोकसभा सदस्य राहुल ने कहा कि मौजूदा लड़ाई केवल भाजपा और कांग्रेस के बीच नहीं बल्कि दो 'अभिव्यक्तियों' के बीच है। उन्होंने कहा, ''कोई सोचता है कि देश एक केंद्र से चलना चाहिए, जहां एक व्यक्ति के पास सारा ज्ञान है। इसके विपरीत, हम सोचते हैं कि शक्ति का विकेंद्रीकरण होना चाहिए और लोगों की आवाज सुनी जानी चाहिए।'' राहुल ने कहा कि अगर किसी व्यक्ति के पास आईआईटी (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान) की डिग्री है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उसके पास किसी किसान के मुकाबले ज्यादा ज्ञान है। लेकिन भाजपा इस तरह काम नहीं करती है। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सोच है कि सिर्फ एक व्यक्ति के पास ज्ञान है...किसान, मजदूर और बेरोजगार युवाओं को कोई ज्ञान नहीं है।

यह चुनाव राष्ट्र के विजन–2047 के दृढ़संकल्प को साकार करेगा

पटना, एजेंसी। लोकसभा चुनाव का बिगुल बज गया है। चुनाव की तिथियों की घोषणा हो गई। बिहार में सभी सात चरणों में चुनाव होंगे। चुनाव की घोषणा के बाद भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि यह चुनाव राष्ट्र के विजन–2047 के दृढ़संकल्प को भी साकार करेगा। उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि लोकतंत्र के महापर्व आम चुनाव 2024 के माध्यम से देशभर के मतदाता आगामी 5 वर्ष का दशा और दिशा तय करेंगे। यह चुनाव राष्ट्र के विजन–2047 के दृढ़संकल्प को भी साकार करेगा। एनडीए एक बार फिर से भारी बहुमत से सरकार बनाएगी। लोजपा के प्रमुख और सांसद चिराग पासवान ने एक्स पर लिखा, चुनाव आयोग द्वारा

दुनिया के सबसे बड़े जीवंत लोकतंत्र में चुनावी महापर्व की घोषणा का मैं स्वागत करता हूं। लोकसभा चुनाव–2024 में मैं देश के सभी मतदाताओं से बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने की अपील करता हूं। उन्होंने युवा मतदाताओं से आग्रह करते हुए कहा कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। युवा अपनी वोट की ताकत पहचानें और अपने बेहतर भविष्य के लिए मतदान अवश्य करें। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एनडीए 400 पार का लक्ष्य हासिल करेगी।

सरकार के इशारों पर काम करता है निर्वाचन आयोग

नई दिल्ली, एजेंसी। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने रविवार को कहा कि पश्चिम बंगाल में सात चरण का लोकसभा चुनाव इस बात का सबूत है कि चुनाव आयोग सरकार के इशारों पर काम करता है।

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पर उठाया सवाल

सिब्बल ने हाल ही में दो चुनाव आयुक्तों ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू की नियुक्ति पर भी सवाल उठाया और कहा कि उन्हें इस तथ्य के बावजूद नियुक्त किया गया कि संविधान पीठ के फैसले में कहा गया है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) को भी इसका सदस्य होना चाहिए। जहां तक देश में लोकसभा चुनाव के सात चरणों का सवाल है, इसकी उम्मीद थी। वास्तव में जिस तरह से उन्होंने इन दोनों चुनाव आयुक्तों को इस तथ्य के बावजूद नियुक्त किया कि संविधान पीठ के फैसले में कहा गया है कि सीजेआई को भी समिति का सदस्य होना चाहिए। जिस तरह से उन्होंने सुप्रीम में चुनौती लंबित होने के बावजूद संविधान पीठ के फैसले को खारिज कर दिया है। सिब्बल ने आरोप लगाते हुए कहा कि अदालत और जिस तरह से उन्होंने नियुक्ति को आगे बढ़ाया, उससे पता चलता है कि उनका इरादा वहां अपने लोगों को रखने का था।

तृणमूल ने जताई चिंता

सिब्बल ने कहा कि पश्चिम बंगाल में सात चरणों का चुनाव इस बात का सबूत है कि चुनाव आयोग सरकार के इशारों पर काम करता है।

मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि चुनाव 19 अप्रैल से शुरू होंगे और उसके बाद 26 अप्रैल, 7 मई, 13 मई, 20 मई, 25 मई और 1 जून को चरण होंगे। तीन राज्यों– बिहार, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में सभी सात चरणों में मतदान होगा। तृणमूल कांग्रेस ने चुनिंदा पार्टियों को अनुचित लाभ पर चिंता का हवाला देते हुए, सात चरणों में चुनाव कराने के चुनाव

आयोग के फैसले पर निराशा व्यक्त की थी। अरविंद केजरीवाल और के कविता पर दिया जवाब

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय के समन और बीआरएस नेता के कविता की गिरफ्तारी के बारे में पूछे जाने पर सिब्बल ने कहा कि इस सरकार का पूरा इरादा यह सुनिश्चित करना है कि सभी विपक्षी नेताओं के खिलाफ कार्रवाई की जाए, ताकि वे प्रचार नहीं कर सकें। उन्होंने आरोप लगाया, पूरी संवैधानिक मशीनरी को भंग कर दिया गया है और हमारे पास एक ऐसी सरकार की मशीनरी है, जिसने यह सुनिश्चित करने के लिए संवैधानिक प्रावधानों की अवहेलना की है कि वे सत्ता में बने रहें।

ईडी को लेकर किया कटाक्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रवर्तन निदेशालय की प्रशंसा पर सिब्बल ने कहा कि उन्हें भ्रष्टाचार के प्रति अपनी अटूट निष्ठा के लिए ईडी की प्रशंसा करनी चाहिए। सिब्बल ने कहा, मुझे कहना होगा कि इस सरकार के प्रति ईडी की वफादारी अटूट है और वास्तव में इसकी सराहना की जानी चाहिए।

चुनावी बॉन्ड को लेकर कसा तंज

चुनावी बॉन्ड मामले के बारे में बात करते हुए, राज्यसभा सांसद ने कहा कि तथ्य इस देश के लोगों के सामने हैं। उन्होंने कहा, आप किसी व्यक्ति के खिलाफ ईडी की कार्यवाही शुरू करते हैं, कुछ महीनों के भीतर वह चुनावी बॉन्ड खरीदता है और उन्हें सत्ता में पार्टी को दे देता है। वे संविधान के विपरीत देश चला रहे हैं, तो आइए देखें कि अदालतें क्या करती हैं।

संपादकीय

निरंतरता और शिथिल परिवर्तन के बीच

न्याय की गर्मी लगभग आ चुकी है, और नवीनता की एक आश्चर्यजनक भावना के साथ हम इसका सामना करते हैं। अब जब चुनाव आयोग ने हमें मतदान के लिए अपेक्षित सात–चरणीय कैलेंडर दिया है, तो हम आधिकारिक तौर पर चुनावी मौसम में हैं। तराजू पर मतदाताओं की संख्या 1 अरब की ओर बढ़ने के साथ, 18वीं लोकसभा का चुनाव आसानी से लोकप्रिय जनादेश प्राप्त करने के लिए विश्व इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा अभ्यास होगा – 1947 में भारत की कुल जनसंख्या केवल 34 करोड़ थी, जो वर्तमान मतदान का एक तिहाई है। 97 करोड़ की आबादी. 47.1 करोड़ पर, महिला मतदाता अभी भी इसके आधे से भी कम हैं, लेकिन बढ़ती उत्साही भागीदारी और स्वतंत्र विकल्प चुनने के साथ, बिल्कुल भी अप्रासंगिक विवरण नहीं है। लगभग 20 करोड़ का एक समूह 20–29 के अशांत आयु–समूह में है। लगभग 1.84 करोड़ लोग पहली बार लोकतंत्र के अनुष्ठानों का अनुभव करेंगे। क्या पसंद की गुणवत्ता मेल खाती है? व्यापक मनोदशा क्या है? अगर 2022 में किसी ने यह सवाल पूछा होता तो शायद यह एक औपचारिकता होती. अगर कोई चीज नरेंद्र मोदी सरकार को चिह्नित करती है, तो वह सत्ता में अपनी अटूट पकड़ का एहसास कराती है। यह लंबे समय से राजनीतिक पूंजी के प्रमुख स्रोतों में से एक रहा है, जो परिणामों की एक निश्चित अनिवार्यता को इंगित करने में सक्षम है। जो लोग इसके पक्ष में थे, उन्होंने इस अर्थ में विलासिता का आनंद लिया, जो इसके विरोध में थे, उन्होंने इससे इस्तीफा दे दिया। हाल ही में, वह स्थिर हवा कुछ हद तक खघ्राब हो गई है। भाजपा की निश्चितता की भाषा अचानक थोड़ी कम शांत हो गई है – वास्तव में, ष्400 पारष् का बार–बार किया गया नारा अनकही चिंता के संकेत से भरा हुआ लगता है। पुलवामा जैसी बिजली की छड़ी के बिना, यह राजनीतिक मैदान के छोटे टुकड़े इकट्ठा कर रहा है – निश्चित रूप से। राम के बाद, उसने अच्छे उपाय के लिए नीतीश कुमार को भी अपने तरकश में शामिल करना बुद्धिमानी समझा, जबकि जहां भी संभव हो कुछ और ढीले क्षत्रपों और विधायकों को हटा दिया, जिसका अंत आश्चर्यजनक रूप से नवीन पटनायक के साथ मिलकर हुआ। सभी कार्रवाइयों का मतलब प्रत्येक में मुट्ठी भर सीटें सील करना था, सावधानीपूर्वक स्टॉक करना जैसे कि कम वर्षा की किसी भी संभावना से बचाव करना हो। यानी सतर्क निगरानी. 2004 के शशाइनिंग इंडियाश चुनाव का वीरतापूर्ण भ्रमपूर्ण आशावाद नहीं। उन्हें इसकी आवश्यकता महसूस हुई, यह नवीनता है। इसके सभी कारण मौजूद हैं। समर्थक वोट अभी भी इच्छुक लोगों का एक विशाल गठबंधन है, किले की दीवारें योजना के लाभार्थियों, दृश्यमान विकास के समर्थकों और शुद्ध राजनीतिक संबद्धता पर वोट देने वालों से भरी हुई हैं। इसे आगे संस्थागत कब्जे द्वारा फायरवॉल किया गया है, जो मीडिया परिदृश्य तक फैला हुआ है, जहां निर्मित सर्वसम्मति औद्योगिक पैमाने पर लागू होती है – इसके विपरीत, असहमति एक कुटीर उद्योग है। सभी हिसाब से, यह अभेद्य दिखता है। लेकिन इन सब से परे, वास्तविक असंतोष के क्षेत्र भी हैं। बेरोजगार युवाओं की सेना में, तनावग्रस्त कृषि क्षेत्र में, और नागरिक समाज में जहां चुनावी बांड जैसे मुद्दे नैतिक वैधता के स्तर पर सामने आते हैं। मोदी ऐसे समय में आये थे जब यूपीए–2 नैतिक रूप से थककर गिर रहा थाय मुक्ति का वादा, जिसे कई भारतीयों के लिए बहुत लंबे समय से टाला गया था, अभी भी पुराना नहीं हुआ है। दूसरी ओर, कांग्रेस पुनर्जीवित होने के कुछ संकेत दिखा रही है, भले ही वह एक जर्जर गठबंधन की मुखिया होय और बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र जैसे प्रमुख बड़े राज्य बड़े सवाल पूछ रहे हैं। एक जन नेता के रूप में तेजस्वी यादव का विकास और परिपक्वता नीतीश के पतन के विपरीत आनुपातिक प्रतीत होती है। बंगाल, सभी गंभीर सात चरणों के माध्यम से, ममता बनर्जी के खिलाफ सीएए और संदेशखाली जैसे ध्रुवीकरण वाले विषयों को खड़ा करेगा, फिर भी बिजली गिरने की संभावना के साथ बहुत अधिक गड़गड़ाहट होगी। महाराष्ट्र में बहुत अधिक गतिशील भाग हैं। लेकिन अगर भाजपा का आत्म–आश्वासन किनारों पर थोड़ा नरम है, तो विपक्ष भी पूरी तरह से अपने अविश्वास के पक्षाघात से उभर नहीं पाया है। यह युद्ध के मैदान में पूर्व त्यागपत्र की भावना से आक्रमण करके पहुंचता है, लगभग एक आशा की तरह जो दृढ़ विश्वास में बदलने के लिए बहुत डरपोक होती है। कांग्रेस के उम्मीदवारों की सूची में बड़े नाम स्पष्ट रूप से अनुपस्थित हैं – जनरल अपनी लड़ाई चुनने में कुछ ज्यादा ही चयनात्मक हो रहे हैं, जबकि ड्राफ्ट को पूरी तरह से टाल नहीं रहे हैं। संभावित पांचवें स्तंभकारों से भरी अलमारियों और भाईचारे की लड़ाई में बंद लोगों की बात नहीं की जा रही है। अक्सर, डेविड गुलेल के बजाय बूमरैंग से लैस दिखता है। लेकिन जितनी अधिक चीजें नहीं बदलतीं, उतनी ही अधिक वे वैसी नहीं रह पातीं। परिणाम सत्ता की बाहरी संरचनाओं को बदलते हैं या नहीं, राजनीति के विकास के पहलू स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। एक, कांग्रेस ने पहली बार स्पष्ट रूप से जाति सशक्तिकरण की भाषा अपनाई है। इसमें गांधी की पितृसत्तात्मक समावेशिता से अलग होने की क्षमता है, और निश्चित रूप से समय के साथ यह खोखला प्रतीकवाद बन गया है – दोनों में एक सौम्य सुधारवाद शामिल है जिससे यथास्थिति को कोई खतरा नहीं है। इसे सामरिक उपयोगिता की दृष्टि से चिन्हित करना कठिन है क्योंकि इसके तात्कालिक प्रभाव अप्रत्याशित होते हैं।

औसत जेन्स स्क्रीन पर अपना जलवा बिखेर रही

विनोद

अमोल पालेकर की 1990 की संगीतमय, थोडासा रूमानी हो जाएँ, सबसे कम रेटिंग वाली हिंदी फिल्मों में से एक है। सीधी–सादी, मामूली लड़की बिन्नी की कहानी, जिसका प्रचलित नाम है, एक ऐसी कहानी है जिसमें कई महिलाएं अपना प्रतिबिंब पा सकती हैं। सुंदरता के असंभव मानकों पर खरा उतरने में असमर्थ, न ही एक अच्छा प्रेमी पाने में सक्षम, बैगी शर्ट और पतलून पहने ष्मर्दानीष (टॉमबॉय) बिन्नी समझ नहीं पा रही है कि औरत कैसे बनती हैं (स्त्री जैसा कैसे बनें) और एक सहानुभूतिपूर्ण पिता के प्यार और समर्थन और अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता के बावजूद, उसमें आत्मविश्वास की कमी है। खुद पर विश्वास करने में सक्षम होने की उनकी यात्रा एक सदाबहार फील–गुड फिल्म बनाती है, जिसका शीर्षक शीर्षक गीत में समाहित है – जीना है मुश्किल, उम्मीद के बिना, थोड़े से सपने सजाएं (आशा के बिना जीना असंभव है, आइए इसे संवारें) कुछ सपनों के साथ)। किरण राव की हाल ही में रिलीज हुई द्वितीय वर्ष की फिल्म, लापता लेडीज, एक नोट पर समाप्त होती है, जो उसी तरह, महिलाओं के लिए और खुद के लिए आशाएं और अपेक्षाएं रखने के महत्व को रेखांकित करती है– "सपना देखने की माफी नहीं मांगते (किसी को कभी भी माफी नहीं मांगनी चाहिए) अपने लिए सपने संजोने के बारे में)।" 1966 में, विजय आनंद की गाइड में वहीदा रहमान की रोजी ने मार्को (किशोर साहू) के साथ अपने क्लॉस्ट्रोफोबिक विवाह से मुक्त होने का शानदार प्रदर्शन किया, जब उन्होंने ष्कोई ना रोको दिल की उड़ान कोष पर बिना सोचे–समझे नृत्य किया। उड़ता हुआ दिल)।" दशकों को अलग रखते हुए, ये फिल्में औसत जेन्स के खुद को और जीवन में उनके उद्देश्य को खोजने में सक्षम होने के बारे में हैं। एक क्लासिक है जो वैवाहिक अलगाव और बेवफाई के स्पष्ट चित्रण के लिए अपने समय से बहुत आगे थी। दूसरा, एक मध्यमार्गी, छोटी फिल्म जो आज तकनीकी रूप से कमजोर लग सकती है, लेकिन इसका विषयगत मूल बिल्कुल भी पुराना नहीं हुआ है। नवीनतम, अपने ग्रामीण परिवेश के प्रति प्रामाणिक रहते हुए, पूरे स्पेक्ट्रम में महिलाओं (और पुरुषों के साथ–साथ) के साथ एक गहरा, सार्वभौमिक जुड़ाव बना रहा है, अगर आलीशान मल्टीप्लेक्स में देखी जाने वाली तालियों और जयकारों को देखा जाए तो। यह याद दिलाता है कि कैसे रानी (कंगना रनौत) ने 2013 में विकास बहल की क्वीन में ष्हंगामा हो गयाष पर नृत्य करके घर को तहस–नहस कर दिया था। लंबे समय के बाद, हमारे पास रिपीट वैल्यू वाली एक हिंदी फिल्म है, भले ही वह रिप्ले बाद में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने के साथ हो। पिछले साल बॉक्स ऑफिस पर पुरुषों का रुझान चरम पर था और महिलाएं बड़ी स्क्रीन से निकलकर स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तक सीमित हो गई थीं, ये पड़ोस की महिलाएं, खोई हुई या अन्यथा, जो हाल ही में स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और सिनेमा हॉल को आबाद करने के लिए आई हैं, दर्शकों के लिए ताजी हवा की बहुत जरूरी सांस। हो सकता है कि वे आज के जुझारू सिनेमा द्वारा अर्जित किए गए हजारों करोड़ की तुलना में मामूली कमाई कर रहे हों, लेकिन एक स्वस्थ और संपूर्ण विकल्प प्रदान कर रहे हैं, एक शांत और मामूली उपाय जो ष्शक्ति का संतुलनष स्थापित करने के बारे में है। दौड़ने वाले खरगोशों की तुलना में धीमे और स्थिर कछुए, टूटते सितारों की तुलना में अधिक लंबी दूरी के धावक होते हैं। पिछले साल हमारे पास हंसल मेहता की नेटफ्लिक्स सीरीज स्कूप थी, जो अपराध पत्रकार जागृति पाठक (करिश्मा तन्ना) की वरिष्ठ पत्रकार जयदेब सेन (प्रोसेनजीत चटर्जी) की हत्या में संलिप्तता के आरोप में अपनी बेगुनाही साबित करने की कोशिश के बारे में थी। प्राइम वीडियो पर रीमा कागती और रुचिका ओबेरॉय की दहाड़, राजस्थान में जाति–ग्रस्त, पितृसत्तात्मक और स्त्री–द्वेषी मांडवा में एक सीरियल किलर का पीछा करने वाले पुलिस के एक समूह के बारे में है, जिसके मूल में सब–इंस्पेक्टर अंजलि भाटी (सोनाक्षी सिन्हा) थीं। वह शादी की पारिवारिक और सामाजिक अपेक्षाओं, काम पर लैंगिक पूर्वाग्रह और बाकी सब के ऊपर बड़े जाति–आधारित भेदभाव को खारिज कर रही है। यशोवर्धन मिश्रा की नेटफ्लिक्स श्रृंखला कथल दो लापता कटहलों के मामले के बारे में थी, जो बदले में, उत्तर भारत में हास्यास्पद कानून प्रवर्तन और जाति की राजनीति की एक हास्यास्पद खोज बन गई, जिसे सान्या मल्होत्रा द्वारा निभाई गई इंस्पेक्टर महिमा बसूर के दृष्टिकोण से कैप्चर किया गया था। टीएनआईई को दिए एक साक्षात्कार में, स्कूप की निर्माता–लेखिका, मृणमयी लागू वाइकुल ने कहा था कि जिस बात ने उन्हें उत्साहित किया वह यह थी कि यह एक ष्सामान्य लड़कीष के बारे में थी जो काम करने और अपने जीवन में कुछ करने की क्षमता रखती थी। "वह, उसकी दुनिया, उसका परिवार, चुनौतियाँ सभी संबंधित हैं," उसने कहा। बड़े शहर में एक मध्यमवर्गीय लड़की की आकांक्षाओं को दिखाते हुए, उन्होंने कार्यस्थल में लिंगवाद और मीडिया की नैतिकता के मुद्दे को उठाया, जबकि जागृति की जेल डायरी ने विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला। पिछले कुछ वर्षों में महिला–केंद्रित फिल्मों ने उनकी पारंपरिक परिभाषा, समझ और अपेक्षाओं से एक अलग दिशा ले ली है। मेहबूब खान की मदर इंडिया जितनी क्लासिक है, समय के साथ इसने मजबूत ऑन–स्क्रीन महिलाओं को परिभाषित करने में अपना स्वयं का स्टीरियोटाइप भी बनाया है। हम महिला–केंद्रित फिल्मों की पहचान उन महिलाओं की पीड़ा, बलिदान के बारे में महाकाव्य कथाओं के रूप में करने लगे हैं जिनके लिए शादी, बच्चे, परिवार, समुदाय और समाज स्वयं से ऊपर हैं। धीरे–धीरे इसने मिर्च मसाला, मृत्युदंड, अर्थ और स्पर्श जैसे अन्य प्रकार के सिनेमा के लिए रास्ता बना दिया, जिसमें सामंतवादी महिलाओं ने पितृसत्ता और विद्रोह का सामना किया।

मातृत्व पर गुल पनाग के विशिष्ट दृष्टिकोण पर

रवि

मातृत्व की खुशियाँ शुद्ध नहीं होतीं किसी दुर्लभ सीजन में यह थोड़ी शर्मिंदगी भरी स्वीकारोक्ति हो सकती है या, कभी–कभी, बुद्धि के कमजोर दिखावे का हिस्सा हो सकती है। ऐसा लगता है कि बच्चे चिंता कर रहे हैं, फिर भी अपनी असहनीयता, अपने खसरे और चिकनपॉक्स, अपनी उधम और सनक, अपने अटल विश्वास कि कीड़े और कीचड़ भोजन हैं, अपनी उत्सुक चंचलता में उलझे हुए हैं जैसे घड़ी में सुबह के तीन बजते हैं। प्यार सभी को जीत लेता है। कुछ माताएँ कहेंगी, जैसा कि गुल पनाग ने किया है, कि मातृत्व अभिभूत करने वाला, कृतघ्न, थका देने वाला, निराशाजनक और समय–समय पर पुरस्कृत करने वाला होता है। ऐसी बातों पर आम तौर पर बात होनी चाहिए। पूर्व ब्यूटी क्वीन, अभिनेता और प्रशिक्षित पायलट, सुश्री पनाग, जिसे सामान्य बनाने की कोशिश कर रही थीं, वह यह स्वीकृति थी कि एक माँ का शरीर और भावनाएँ हमेशा दुनिया के शीर्ष पर महसूस नहीं होती हैं। माँ की छवि के बारे में मिथक की परतें खोलकर, उनकी टिप्पणियाँ एक ऐसे समाज द्वारा बनाई गई सुविधाजनक अमूर्तता पर केंद्रित थीं जो महिलाओं के अनजाने श्रम पर बहुत अधिक निर्भर करता है। लेकिन माताएं अक्सर थकी हुई, परेशान और अपराधबोध और अपर्याप्तता की भावनाओं से ग्रस्त होती हैं। बलिदान देने वाली माँ का आदर्श सांस्कृतिक रूप से इतना गहरा है कि उसकी थकावट और हताशा को पहचानना सामाजिक पदानुक्रम के लिए खतरनाक है। माताओं का अदृश्य कार्य गर्भावस्था से शुरू होता है, जो एक प्राकृतिक और स्वागत योग्य स्थिति है – कुछ पारिवारिक स्थितियों में उत्तरार्द्धा – ताकि अच्छे हार्मोन की रिहाई के बावजूद अनुभव किए जा सकने वाले शारीरिक तनाव की शिकायतें अकल्पनीय हों। हालाँकि बढ़ते बच्चे की शिक्षा, माँ की नर्सरी कविताओं से लेकर होमवर्क तक, कोचिंग कक्षाओं में आना–जाना या माता–पिता–शिक्षक बैठकों में उपस्थिति को अक्सर महिला के अदृश्य काम के रूप में पहचाना जाता है, जैसे कि अलग–अलग समय पर भोजन पकाना, कपड़े धोना और सफाई करना। , शारीरिक तनाव, नौकरी की व्यस्तता का तनाव या पूरे परिवार द्वारा हल्के में लिए जाने की भावनात्मक कीमत का कोई माप नहीं हो सकता है। न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जैसिंडा अर्डर्न के अपने तीन महीने के बच्चे को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में लाने के निर्णय के पीछे शायद कम मूल्यवान और शसामान्यश बनाना ही शामिल था। पश्चिम में अन्य महिला नेता भी शिशुओं को काम पर लाने की वर्जना को खत्म करके मातृ तनाव के प्रमुख स्रोतों में से एक को दूर करने की कोशिश कर रही हैं। पूर्व ब्रिटिश संसद सदस्य, जो स्विंसन, एक बहस के दौरान अपने बच्चे को हाउस कॉमन्स में लेकर आईं। उनके लिए यह आधुनिकीकरण की दिशा में एक कदम थारू न तो महिला का स्थान और न ही उसका पालन–पोषण का कार्य केवल घर तक ही सीमित होना चाहिए। समाज समर्पित मां से प्यार करता है, लेकिन वह अभी भी उस समर्पण को कार्यस्थल के एक सामान्य हिस्से के रूप में देखने से कतराता है। उन्हें एक प्रेमपूर्ण रक्षक, अच्छाई की शक्ति के रूप में माना जा सकता है, क्योंकि भारत के बहुसंख्यक धर्म में कई देवता हैं। लेकिन इस तरह की धारणाएं मां को बच्चे के डायपर टेप से बांधने की युक्ति भी पैदा करती हैं। सुश्री पनाग की स्पष्ट मांग कि मातृत्व की चुनौतियों को सामान्य बनाया जाए, इन स्तरित पाखंडों का ठीक से सामना करती है।

अधिकांश भारतीयों के लिए जो कुछ भी चमकता

आदित्य

लाखों भारतीय – आकांक्षी और पसीना बहाने वाले – जल्द ही मतदान करेंगे जो भारत के सबसे परिणामी आम चुनावों में से एक साबित हो सकता है। कई लोगों के लिए, भाजपा और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की वापसी एक पूर्व निष्कर्ष है, जो विश्व मंच पर भारत के नाटकीय उदय के समान ही अपरिहार्य है। लेकिन भारत को केवल एक कहानी तक सीमित नहीं किया जा सकता। और यह चुनाव की पूर्व संध्या पर भी एक कहानी में नहीं सिमटता। 1.4 अरब से अधिक की आबादी वाले ध्रुवीकृत देश में, गहरी होती गलत रेखाओं के साथ, चुनावी चर्चा में ज्वलंत मुद्दा वह नहीं है जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं, बल्कि वह मुद्दा है जिस पर हम जोर–शोर से चर्चा नहीं कर रहे हैं। ये अंतराल बहुत मायने रखते हैं क्योंकि ये आम नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, जिनमें अल्पसंख्यक भी शामिल हैं, जिन्हें अर्थव्यवस्था और समाज के हाशिये पर धकेल दिया गया है। नागरिक होने का मतलब चुनाव के दौरान वोट डालना और बीच में दर्शक बने रहना नहीं है। इसका अर्थ है किसी के भाग्य में भागीदार बनना, हर समय प्रासंगिक प्रश्न पूछना। भारत की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के साथ दृश्यात्मक जुड़ाव के हिस्से के रूप में, हम भारत के अति–अमीरों या लक्जरी कार निर्माताओं की पूर्व–शादियों या शादियों की चकाचौंध को देखकर आश्चर्यचकित हो सकते हैं, जिन्होंने दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश पर अपनी नजरें गड़ा दी हैं। बेंटले अपना ओपुलेंस एडिशन कलेक्शन पेश कर रहा है, जो सिर्फ भारत के लिए पांच मॉडलों की एक विशेष श्रृंखला है। इसके प्रचारक का कहना है, प्रत्येक मॉडल भारतीय भावना से ओत–प्रोत है, विशेष रूप से राष्ट्रीय ध्वज के रंगों से प्रेरित है।श्श लेकिन एक नागरिक के रूप में, किसी को भारत की अन्य कहानियों को प्रासंगिक बनाना चाहिए और उन पर ध्यान देना चाहिए जो भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, नए हवाई अड्डों, राजमार्गों, रेलवे स्टेशनों और इसके बढ़ते भू–राजनीतिक कद के मेटा आख्यान में दबी हुई हैं। जीडीपी वृद्धि के बावजूद, जो इसे विश्व स्तर पर एक बहुत ही आकर्षक बाजार बनाता है, 800 मिलियन भारतीय अभी भी सरकार समर्थित योजना पर जीवित हैं जो मुफ्त खाद्यान्न प्रदान करती है। अक्टूबर से दिसंबर की अवधि में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, लेकिन चाहे कोई भी सत्ता में आए, आम नागरिकों को यह पूछना चाहिए कि यह उनके लिए बेहतर नौकरियों और जीवन की बेहतर गुणवत्ता में कैसे तब्दील होता है। जो कुछ चमकता है वह हर भारतीय के लिए विकास या खुशहाली नहीं है। एक स्वतंत्र थिंक टैंक सेंटर फॉर मॉनिटरिंग ऑफ इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर जनवरी 2024 में 6.8 प्रतिशत से बढ़कर फरवरी 2024 में आठ प्रतिशत हो गई। "जबकि शहरी भारत में बेरोजगारी दर कम हो गई, ग्रामीण भारत में यह काफी बढ़ गई। ग्रामीण बेरोजगारी दर फरवरी में तेजी से बढ़कर 7.8 फीसदी हो गई, जो जनवरी में 5.8 फीसदी थी. सीएमआईई के अनुसार, शहरी बेरोजगारी दर 8.9 प्रतिशत से गिरकर 8.5 प्रतिशत हो गई। कई अर्थशास्त्रियों ने बताया है कि भारत की जीडीपी वृद्धि आम भारतीयों के लिए बेहतर नौकरियोंध्काम में तब्दील नहीं हो रही है जो अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं। एक राष्ट्रीय समाचार पत्र में हाल ही में प्रकाशित एक टिप्पणी में, जिसका शीर्षक था, ष्भारत में अपनी श्रम शक्ति का इष्टतम उपयोग नहींष, विद्वान मैत्रीश घटक और मृणालिनी झा ने बताया कि यद्यपि हालिया आधिकारिक डेटा भारत में श्रम बल की भागीदारी में वृद्धि और बेरोजगारी में कहा, जनसांख्यिकीय लाभांश की अवधि में, अर्थव्यवस्था अपनी श्रम पूंजी का उपयोग कम गुणवत्ता वाले काम में कर रही है। भारत में श्रम सर्वेक्षण अवैतनिक पारिवारिक सहायकों को ष्रोजगारष के रूप में गिनते हैं। इनमें से कई चुनौतियों के अनुसार। ऐसे कई मुद्दे हैं जो आम भारतीय को प्रभावित करते हैं जैसे गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, पानी, स्वच्छता, पर्यावरण, परिवहन, जीवन और आजीविका पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव इत्यादि। ये आज तक चुनावी चर्चा में

दर में कमी दर्शाता है, विकास मुख्य रूप से स्व–रोजगार और अवैतनिक पारिवारिक श्रमिकों द्वारा संचालित है। भारत की 75 प्रतिशत से अधिक कामकाजी आबादी आम तौर पर कम उत्पादकता वाले कार्यों में लगी हुई हैय झा ने माइक्रोब्लॉगिंग साइट, एक्स, पूर्व में ट्विटर पर एक पोस्ट पर विपक्षी दलों ने भी ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है. लेकिन नागरिकों को अधिक मुखर होना चाहिए। अधिकांश भारतीयों को कम सामाजिक सुरक्षा के साथ कम वेतन पर काम करना जारी है। यह जीवन की निम्न गुणवत्ता में तब्दील होता है, न कि केवल प्रथम विश्व मानकों बमुश्किल ही दिखाई दे रहे हैं। जैसे–जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य व्यय मेरी शीर्ष चिंताओं में से एक है, हालांकि मैं अपेक्षाकृत विशेषाधिकार प्राप्त हूं।और मेरे पास स्वास्थ्य बीमा है। लेकिन सभी स्वास्थ्य व्यय बीमा द्वारा कवर नहीं किए जाते हैं।

बीजेपी के प्रति चिराग पासवान की मिठास

आसिफ

बिहार में भारतीय जनता पार्टी को समझना राजनीतिक पंडितों के लिए मुश्किल हो रहा है। सबसे पहले, इसने 2020 के विधानसभा चुनावों में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनके जनता दल (यूनाइटेड) को छोटा करने के लिए दिवंगत केंद्रीय मंत्री राम विलास पासवान के बेटे चिराग पासवान और उनकी लोक जनशक्ति पार्टी का इस्तेमाल किया। जब काम पूरा हो गया, तो बीजेपी ने चिराग के चाचा पशुपति कुमार पारस को एलजेपी से अलग कर दिया और उन्हें केंद्रीय मंत्री भी बना दिया. चिराग को अपने हाल पर छोड़ दिया गया। उनके पिता को आवंटित विशाल क्वार्टर को जबरन खाली करा लिया गया। लेकिन अब जब लोकसभा चुनाव नजदीक हैं और सीट–बंटवारे पर चर्चा होनी है, तो यह फिर से चिराग को लुभा रही है और शायद अपने चाचा को भी छोड़ दिया है। इसके अलावा, लोग भाजपा के प्रति चिराग की मधुरता से भी हैरान हैं, खासकर इतनी परेशानी झेलने के बाद। वे अब सोच रहे हैं कि क्या यह मोदी जादू काम कर रहा है या स्वार्थी हित इस तरह के सौहार्द का कारण हैं। हालाँकि यह तय है कि कोई भी राजनीतिक दल पासवान वोट बैंक को नजरअंदाज नहीं कर सकता, जो राज्य के मतदाताओं का 6% है। जड़ों के करीब जहां सभी राजनीतिक दलों के नेता लोगों के साथ बातचीत करने और इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट करने में व्यस्त हैं, वहीं राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव अपने आवास पर गौशाला में एक वीडियो पोस्ट करने के लिए खड़े हुए। उन्होंने गायों और बछड़ों का निरीक्षण किया और कहा कि गौ माता की सेवा करने का कोई मौका नहीं चूकते। "वह हमारे सांस्कृतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और पारिवारिक जीवन के केंद्र में रही हैं। मेरे माता–पिता के कारण बचपन से ही मेरे मन में गोमाता के प्रति गहरा प्रेम, लगाव और भक्ति है। उनकी मां और बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी भी अपने आवास पर खेत में पहुंचीं। उन्होंने मूली उखाड़ते हुए और केयरटेकर को इसकी पत्तियां गायों को खिलाने का निर्देश देते हुए एक वीडियो पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि लोगों को जीवन की वास्तविकता को समझने के लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिए। दोनों वीडियो वायरल हो गए, जिन्हें हजारों लाइक्स मिले। इससे भाजपा घबरा गई और उसके नेताओं ने तुरंत दावा करना शुरू कर दिया कि वे असली गौ सेवक और किसानों के शुभचिंतक हैं। लेकिन उनमें से किसी ने भी अब तक इसका कोई वीडियोग्राफिक प्रमाण पोस्ट नहीं किया है। रहस्यमय नोट एक आश्चर्यजनक कदम में, केंद्र ने प्रेस नोट, नागरिकता संशोधान अधिनियम, 2019 पर सकारात्मक कथन को जारी करने के कुछ ही घंटों के भीतर हटा लिया। इसमें केंद्रीय गृह मंत्रालय ने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम के शमुस्लिम विरोधीश होने की बढ़ती आलोचना के बीच मुसलमानों के डर को दूर करने की कोशिश की थी। इसने कहा कि भारतीय मुसलमानों को चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि सीएए का उन 18 करोड़ भारतीय मुसलमानों से कोई लेना–देना नहीं है जिनके पास अपने हिंदू भाइयों के समान अधिकार हैं। सूत्रों ने बताया कि हेडलाइन पर प्रतिक्रिया के बाद प्रेस नोट को हटा दिया गया। लोगों ने सरकार पर सीएए के अंतर्निहित निहितार्थों को स्पष्ट किए बिना एक और प्रचार अभियान चलाने का आरोप लगाया। बाद में, कई लोगों ने कहा कि नोट को वापस लेना अपने आप में एक संकेत था कि केंद्र लोगों को धोखा देने के लिए केवल एक शसकारात्मक कहानीश पेश कर रहा था। सरकार ने अभी तक इस पर कुछ नहीं कहा है कि प्रेस नोट को उसकी वेबसाइट से जल्दबाजी में क्यों हटाया गया। एक की शक्ति एक साथ चुनाव पर पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय समिति में उनके अलावा छह सदस्य थे। समिति, जिसमें 65 बार बातचीत हुई, में विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में केंद्रीय कानून मंत्री और सचिव के रूप में एक पूर्व केंद्रीय कानून सचिव भी थे। फिर भी, सबसे शक्तिशाली माने जाने वाले सदस्य केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह थे। 65 बातचीत में से 14 समिति की ही बैठकें थीं। हालाँकि, शाह उनमें से केवल चार में ही शामिल हुए। क्या उसे कोई दिलचस्पी नहीं है या वह पिछली सीट से गाड़ी चला रहा है? रुख बदला ओडिशा में भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष मनमोहन सामल ने बीजू जनता दल के साथ गठबंधन के मुद्दे पर पलटवार किया। गुरुवार तक, सामल ने कहा था कि भाजपा 147 विधानसभा सीटों और 21 लोकसभा सीटों पर अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। इससे लोगों को आश्चर्य हुआ और सामल ने जल्द ही अपना रुख बदल दिया और कहा कि उन्होंने जो कहा था वह उनकी निजी राय थी। बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं सहित कई लोगों को आश्चर्य है कि किस अदृश्य शक्ति ने उन्हें अपना रुख बदलने पर मजबूर कर दिया। क्या अमित शाह या जेपी नड्डा का इससे कोई लेना–देना है? खोया हुआ नेता केरल राज्य के परिवहन मंत्री केबी गणेश कुमार अपनी हाजिरजवाबी के लिए जाने जाते हैं। अभिनेता से नेता बने कुमार काफी समय से वाम लोकतांत्रिक मोर्चा का अभिन्न अंग रहे हैं। कनिष्ठ आईटी मंत्री और तिरुवनंतपुरम में भाजपा के उम्मीदवार राजीव चंद्रशेखर, कुमार के रडार पर हैं। चन्द्रशेखर प्रबल दावेदार हैं. लेकिन कुमार ने इस आधार पर अपनी जीत से इनकार कर दिया कि उन्हें यह भी नहीं पता कि ळववहसम मानचित्र के बिना महत्वपूर्ण स्थानों तक कैसे पहुंचा जाए। प्रौद्योगिकी के युग में भी, किसी निर्वाचन क्षेत्र के बारे में बुनियादी विचार का अभाव वास्तव में एक राजनेता के लिए एक बाधा है।

चुनावी पाठशाला लगाकर मत दाताओं को किया गया जागरूक

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी रविन्द्र कुमार माँदड़ के निर्देशन में चल रहे मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत

सोमवार को चुनावी पाठशाला स्थान सेंट थामस इन्टर कालेज शाहगंज में आयोजित किया गया। जिसमें सभी मतदान केंद्रों व सभी परिषदीय विद्यालयों पर चुनावी पाठशाला आयोजित कर सभी लोगों को आगामी 25 मई को मतदान करने के लिए जागरुक व प्रेरित करते हेतु संकल्प दिलाया गया। चुनावी पाठशाला में शाहगंज ब्लॉक के 148 परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/प्रभारी प्रधानाध्यापक ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि खण्ड विकास अधिकारी शाहगंज जितेंद्र प्रताप सिंह व अध्यक्षता कर रहे खण्ड शिक्षा अधिकारी अमर दीप जायसवाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने उपस्थित लोगों को मतदान करने की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए हर तरह से प्रयास किये जा रहे है। इसमें स्कूली बच्चों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्कूलों के बच्चे रैली आदि के माध्यम से मतदाताओं को वोट डालने के लिए जागरुक करते है। उन्होंने शिक्षको आंगनबाड़ी व बीएलओ से अपील किया कि बूथ व गांव स्तर पर गांव वालों को चुनाव व वोट का महत्व बताये तथा 25 मई को मतदान करने के लिए सभी को जागरुक करें। क्योंकि मजबूत लोकतंत्र के लिए सभी मतदाताओं की सहभागिता जरुरी है।

खण्ड शिक्षा अधिकारी अमर दीप जायसवाल ने कहा कि बूथ स्तर व सभी विद्यालयों पर गांवों में चुनाव पाठशाला लगाकर वोटरों को लोकतंत्र का पाठ पढ़ाए। शिक्षक, शिक्षामित्र विद्यार्थियों, अभिभावकों व आसपास के वोटरों को वोट बनवाने से जुड़ी सभी प्रक्रिया बताए और वोटरों को वोट डालने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि विद्यालयों पर होने वाली शिक्षक संकुल बैठक, अभिभावक शिक्षक बैठक, माता उन्मुखीकरण बैठकों में भी मतदाता जागरूकता अभियान चलाये और लोगों को मतदान करने के लिए जागरुक करें।

संचालन जिला स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा ने किया। आभार एआरपी प्रशांत मिश्र ने व्यक्त किया। इस अवसर पर वीरेंद्र यादव, अभिषेक सिंह, अशोक मौर्य, धर्मेन्द्र सिंह, सुजीत सोनकर, अभिषेक सिन्हा, मिथिलेश द्विवेदी, रतनेश सिंह, ओम प्रकाश, अशोक सोनकर, विरेंद्र कुमार, श्रीकांत, अरविंद प्रकाश सिंह, सहित 148 विद्यालयों के प्रधानाध्यापक शिक्षक एआपी आदि उपस्थित रहे।

बच्चों को सारनाथ में कराया गया एक्सपोजर विजिट

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। विकासखंड करंजकला के बच्चों की एक्सपोजर विजिट सारनाथ वाराणसी में करायी गयी। कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत आदरणीय खंड शिक्षा अधिकारी श्री श्रवण कुमार यादव द्वारा हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया गया। इस विजिट में कुल 56 बच्चे और 11 शिक्षकशिक्षकाएं प्रतिभाग किए। सर्वप्रथम बच्चों को बौद्ध म्यूजियम दिखाया गया। तत्पश्चात लंच के उपरांत सभी बच्चे वाराणसी डियर पार्क गए, वहां विभिन्न प्रकार के पशु –पक्षी का अवलोकन करने के पश्चात बौद्ध स्तूप, बौद्ध बिहार और गार्डन आदि तमाम चीजों को देखे और शिक्षक– शिक्षिकाओं द्वारा बच्चों को प्रत्येक चीजों का एक्सपोजर दिया गया। शाम को सभी सकुशल अपने घर गये इस एक्सपोजर विजिट में ए आर पी जगदीश यादव, ए आर पी संदीप कुमार चौधरी, सहायक अध्यापिका आराधना चौहान, पूनम जायसवाल, वीरेंद्र यादव, निरंजन यादव सहित अन्य साथी शिक्षक उपस्थित रहे।

विद्यालय विकास के लिए एसएमसी, ग्रामप्रधान और शिक्षक में तालमेल जरूरी - दीपक सिंह

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। ब्लाक संसाधन केंद्र सिकरारा पर सोमवार को समग्र शिक्षा अभियान के तहत ब्लाक स्तरीय नोडल अध्यापक, प्रधानाध्यापक, एसएमसी अध्यक्ष, ग्राम प्रधान व सदस्यों की गठित विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक व उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

हुआ। कार्यक्रम में सभी सदस्यों को उनके कार्य व दायित्व का बोध कराया गया। बताया गया विद्यालय विकास में एसएमसी की भूमिका काफी अहम है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्त एवं लेखाधिकारी दीपक सिंह ने विद्यालय विकास के लिए एसएमसी, ग्रामप्रधान और शिक्षक में तालमेल जरूरी है जिसमे शिक्षकों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी राष्ट्र के विकास में बुनियादी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस तरह के आयोजन से बुनियादी शिक्षा निश्चित रूप से मजबूत होगी। विशिष्ट अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी सर्वेश मोहन श्रीवास्तव ने सभी सदस्यों को उनके कार्य व दायित्व का बोध कराया। उनसे विद्यालय के विकास व शैक्षणिक गुणवत्ता को बनाए रखने में सहयोग मांगा। प्रत्येक बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने के लिए अभिभावकों को प्रेरित किया। सदस्यों को उनके कार्य व अधिकार बताए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे खंड शिक्षा अधिकारी आनंद प्रकाश सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि डीबीटी का शत प्रतिशत लाभ बच्चों को मिले, शासन के निर्देश के क्रम में विद्यालय में कंपोजिट ग्रांट का सही तरीके से और आवश्यक चीजों के लिए उपयोग हो, विद्यालय का भौतिक परिवेश सुसज्जित हो बाला पेंटिंग बना हो, सभी विद्यालयों में इन बिंदुओं पर प्रधानाध्यापक एसएमसी और प्रधान से समन्वय स्थापित कर पूरा करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष अमित सिंह ने कहा कि ये सारी व्यवस्थाएं बच्चों के लिए की जा रही है इसलिए अप्रैल माह में अभियान चलाकर शारदा अभियान के अंतर्गत ज्यादा से ज्यादा बच्चों का अपने परिषदीय विद्यालयों प्रवेश कराया जाये।

कार्यक्रम का संचालन प्रधानाध्यापिका संयुक्ता सिंह ने किया।

वक्ताओं में एडीओ एसटी श्वेता शर्मा, एआरपी शैलेश चतुर्वेदी अनुपम श्रीवास्तव शैलेंद्र यादव सुनील सिंह एसएमसी अध्यक्ष दीपक सिंह ने डीबीटी कायाकल्प एसएमसी उन्मुखीकरण इत्यादि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर गीता सिंह, निर्मला देवी, विजय बहादुर सिंह, राजीव सिंह लोहिया, रवि मिश्र डॉ कृपानिधि यादव, प्रेम तिवारी, सन्तोष सिंह गोली, अवंतिका सिंह, ब्ल्वा सिंह, सुशीला यादव, सतीश सिंह, सुनील यादव, रिजवान उल हक, राजेन्द्र प्रताप यादव, सत्य प्रकाश सिंह, राजीव उपाध्याय, संगीता सिंह, प्रीति राय, सुरेंद्र प्रजापति, रमाकांत यादव, असलम, राजेश यादव, सत्य प्रकाश यादव, हरीशचंद्र विश्वकर्मा इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश के डायट प्राचार्यों व प्रतिनिधियों ने बिहार के एस.सी. ई. आर. टी व डायट का किया एक्सपोजर विजिट

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के सेंटर आफ एक्सीलेंस चुने गए डायट के प्राचार्यों व प्रतिनिधियों ने एस.सी. ई. आर. टी के तत्वाधान में एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम के अंतर्गत बिहार प्रदेश के जिले समस्तीपुर, गया, भोजपुर, नवादा आदि में संचालित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) एवं प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विभिन्न कार्यों का निरीक्षण कर वहां की कार्यशैली को समझा स उत्तर प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के संयुक्त शिक्षा निदेशक डॉ. पवन सचान, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जनपद जौनपुर के प्राचार्य प्रतिनिधि वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. रवीन्द्र नाथ सहित 12 डायट प्राचार्यों व प्रतिनिधियों ने बिहार के विभिन्न डायट के इंफ्रास्ट्रक्चर और विभागों के साथ किये जा रहे नवाचारों व प्रशिक्षण कार्यक्रमों को जाना व समझा स सभी विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की सभी ने माइक्रो लेवल पर कार्य को समझा स उत्तर प्रदेश के समस्त सदस्यों ने बहुत बारीकी से एस.सी.ई.आर.टी पटना के कार्यों का अध्ययन व अनुश्रवण किया स बिहार एस.सी.ई.आर.टी. निदेशक आई.ए.एस. सज्जन आर ने विस्तार से एस.सी.ई.आर.टी के बारे में टीम को समझाया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जनपद जौनपुर के प्राचार्य प्रतिनिधि वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. रवीन्द्र नाथ ने एक्सपोजर विजिट के अनुभव को डायट के समस्त प्रवक्ता व समस्त कर्मचारियों के बीच साझा करते हुए बताया कि बिहार के डायट की कार्यशैली जैसे– दीक्षा के विभिन्न विषयों एवं माइक्रो इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट कैसे निर्मित किए जाएं तथा यह कैसे शिक्षकों तक पहुंचे, वित्त का प्रबंध व उसका स्रोत क्या है, सेवापूर्व व सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में इसका प्रयोग, स्टाफ के कार्यशैली व सक्रियता, डायट के इंफ्रास्ट्रक्चर तथा एक्सपोजर विजिट का लाभ स्थानीय संस्थाओं को कैसे प्राप्त हो इस पर चर्चा–परिचर्चा की गई। प्राचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने वहां के नवाचारों, कक्षा प्रबंधन व इंटर्नशिप को यहां पर भी सेंटर आफ एक्सीलेंस डायट के रूप में लागू करने पर सहमति व्यक्त की।

आपसी भाईचारे को बढ़ावा देता है होली मिलन समारोह – मीरा अग्रहरी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। होली आने वाली है इस मौके पर एक होली मिलन समारोह का आयोजन शहर के पूर्वी सहकारी कालोनी में एक होटल में आयोजित हुआ,कार्यक्रम की शुरुआत जेसीआई संस्था अध्यक्ष मीरा अग्रहरी ने सभी सदस्यों तथा आए हुए अतिथियों को गुलाल का टीका लगाकर शुरुआत की, तत्पश्चा रंगारंग कार्यक्रम तथा संस्था के बच्चों ने और संस्थापक अध्यक्ष पूर्व अध्यक्षों ने तथा सचिवो ने और कई सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।कार्यक्रम का

मुख्य बिंदु रंगों की वर्षा गुलाल की फुहार पिचकारी द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में जेसीआई जौनपुर चेतना की सभी सदस्यों ने पारंपरिक वेशभूषा पहने हुए एक दूसरे को रंग लगाकर गले लगाकर होली की बधाई दी।

कार्यक्रम में संस्थापक अध्यक्ष मेघना रस्तोगी पूर्व अध्यक्ष नीतू गुप्ता, चारु शर्मा,कल्पना केसरवानी,मधु गुप्ता,रीता कश्यप,अभिलाषा श्रीवास्तव, सचिव वंशिका सिंह,कोषाध्यक्ष मीना गुप्ता,अनीता सेठ,यशी गुप्ता,जे जे सेक्रेटरी,अनाया अग्रहरी,सारिका सेठ,विभा गुप्ता, चेतना साहू,रजनी साहू तथा ममता गुप्ता,डॉ आकांक्षा द्विवेदी, ज्ञानेश्वरी गुप्ता,ममता कश्यप, शारदा गुप्ता,संगीता सेठ,डॉली गुप्ता,शिवांगी खरे,दीपिका सिंह, चंदा बरनवाल,प्रतिमा गुप्ता, प्रियंका सिंह,शिल्पी जायसवाल, अनीता गुप्ता,अंजू जायसवाल, शिवानी चौरसिया,गायत्री जायसवाल,मंजू जायसवाल, अपशा नाज, पूजा श्रीवास्तव रोशनी केसरवानी,रिंकी जायसवाल,ज्योति शाह आदि उपस्थित रही कार्यक्रम में विभिन्न संगठन से जुड़े हुए सम्मानित व्यक्तियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा सभी संयोजकों ने आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

जहा कायस्थ होता है सत्ता वही होती है – डा. इन्द्रसेन श्रीवास्तव

जौनपुर। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, उत्तर पद्पेश की बैठक कायस्थ पाठशाला के लखनऊ सभागार में बैठक हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुये महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डा इन्द्सेन श्रीवास्तव ने कहा कि लोकसभा 2024 का चुनाव देश को नयी दिशा देगा. जिसमे हर पाटी के लिए यह चुनाव अहम हो गया है,देश के समस्त छोटे बड़े दल सत्ता की भागीदारी के लिए ऐड़ी छोटी का जोर लगा रहे है। हमारा समाज दलो के दलदल से दूर भाजपा के साथ खड़ा नजर आ रहा है।

परन्तु भाजपा ने प्रदेश में अभी तक हमारे समाज से किसी को प्रत्याशी नही बनाया है जो दुर्भाग्यपूर्ण है।कायस्थ प्रदेश के 18 संसदीय छेत्रों में भाजपा को जिताने का काम करता है। अब तक घोषित 51 छेत्रों में प्रतिनिधित्व ना पाने से समाज आक्रोशित है।मैं आज मिडिया के माध्यम से नेतृत्व को अवगत कराना चाहता हूं कि इसे संज्ञान में ले अन्यथा बनारस,बरेली,लखनऊ, प्रयागराज, फूलपुर, जौनपुर, गोरखपुर की लोकसभा की सीटों का परिणाम प्रभावित हो सकता है।ये सही बात हो सकती है कि हम जीत नही सकते पर इसमें कोई शक नही होना चाहिए कि यदि कायस्थों की पीड़ा परवान चढ़ेगी तो भाजपा को नुकसान उठाना पड़ सकता है।

ये दुनिया जानती है कि जहा कायस्थ होता है सत्ता वही होती है। आज में आप सब के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि फूलपुर और प्रयागराज से कायस्थ प्रत्याशी ही उतारे। हम नेतृत्व को अस्वाथ करना चाहता हूं कि भाजपा के 400 पार का सपना कायस्थ समाज पूरा करेगा।बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष सुशील कुमार श्रीवास्तव, नकुल सक्सेना,लखनऊ अध्यक्ष मोहित प्रकाश श्रीवास्तव,आमोद श्रीवास्तव, प्रत्युष श्रीवास्तव, प्रभाकर निगम, विनोद कुमार श्रीवास्तव, धीरज निगम ने विचार व्यक्त किया।

पीवीआर आइनॉक्स का पॉकेट–फ्रेंडली पासपोर्ट अब बेमिसाल फीचर्स के साथ पूरे भारत में उपलब्ध है

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। भारत की सबसे बड़ी मल्टीप्लेक्स चेन पीवीआर आइनॉक्स लि. ने अपनी मंथली सिनेमा सब्सक्रिप्शन सर्विस 'पासपोर्ट' का दूसरा एडिशन लॉन्च किया है। इसे कंज्यूमर का कीमती फीडबैक लेकर दोबारा डिजाइन किया गया है। पासपोर्ट अब दक्षिण भारतीय राज्यों समेत पूरे देश में उपलब्ध है। और उसका यह दोहराव यूजर के लिये ज्यादा अनुकूल है। इसमें रोमांचक नये फीचर्स और कुछ शर्तें भी हैं। इसकी शुरुआत 18 मार्च से हो रही है और इसके साथ सब्सक्राइबर्स किफायती दामों पर फिल्में देख सकेंगे। सोमवार से गुरुवार तक सब्सक्राइबर्स सिर्फ 349 रुपये में हर महीने 4 फिल्में देख सकते हैं। पासपोर्ट के माध्यम से सब्सक्राइबर्स किसी और के लिये भी टिकट खरीद सकेंगे और रिडीम कर पाएंगे। अगर सब्सक्राइबर्स रिक्लाइनर्स पर या आइमैक्स, पी (एक्सएल), आईसीई, स्क्रीनएक्स, एमएक्स4डी या 4डीएक्स जैसे प्रीमियम और एक्सपीरियेंशियल फॉर्मेट्स में फिल्में देखना चाहते हैं, तो उन्हें पासपोर्ट कूपन के ऊपर 150 रुपये की अतिरिक्त फीस देनी होगी। फिर उनका अनुभव ज्यादा मजेदार बन जाएगा। हालांकि यह फीचर दक्षिण भारतीय बाजारों में उपलब्ध नहीं होगा। फिल्मों के शौकीन पीवीआर एण्ड आइनॉक्स ऐप या वेबसाइट पर या पेटीएम के माध्यम से अपना पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट 2.0 ले सकते हैं। सब्सक्राइबर्स अग्रिम तौर पर 1047 रुपये का भुगतान कर 3 महीने का सब्सक्रिप्शन भी खरीद सकते हैं। इसमें उन्हें 350 रुपये के फूड वाउचर्स मिलेंगे। अभी सिर्फ 50,000 पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट्स, सिर्फ तीन हफ्ते तक उपलब्ध हैं। इसलिये फिल्मों के प्रेमी लोगों को सिनेमा के शानदार सफर के लिये जल्दी से जल्दी अपने–अपने

पासपोर्ट्स पा लेने चाहिये। पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट 2.0 के लॉन्च पर अपना रोमांच व्यक्त करते हुए, पीवीआर आइनॉक्स लि. के को–सीईओ गौतम दत्ता ने कहा, "पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट के पहले एडिशन को फिल्म देखने वालों से काफी प्यार और तारीफ मिली थी। लेकिन यूजर्स ने मायने रखने वाले कई फीडबैक भी दिये कि हम इसे बेहतर कैसे बना सकते हैं। और देश में सिनेमा देखने के लिये जाने का अनुभव समृद्ध बनाने के लिये पासपोर्ट की क्षमता को कैसे बढ़ा सकते हैं। अब हम गर्व से दावा कर सकते हैं कि हमने एक तरोताजा वर्जन तैयार कर लिया है। यह पूरी तरह से उपभोक्ता के अनुकूल है, प्राइज–फ्रिक्शन की चुनौती को दूर करता है। इसके साथ हम अपने देश में सिनेमा देखने के लिये जाने के तरीके सचमुच बदल देंगे। ऐसा प्रस्ताव दर्शकों को ज्यादा से ज्यादा जोनर्स का अधिक से अधिक कंटेन्ट देखने का मौका तो देता ही है। यह छोटी या बड़ी फिल्मों के लिये ज्यादा दर्शकों को खींचने की क्षमता भी रखता है। गौतम ने कहा, "इस बार पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट दक्षिणी राज्यों में भी उपलब्ध होगा। ऐसे में यह सचमुच देशव्यापी हो जाएगा। हमें बहुत सारा प्यार और शानदार प्रतिक्रिया पहले ही मिल चुकी है, क्योंकि पीवीआर आइनॉक्स पासपोर्ट के अच्छे–खासे प्री–रजिस्ट्रेशंस हुए हैं। हमें उम्मीद है कि आप सभी को हम बार–बार फिल्में देखने के लिये आते देखेंगे। पासपोर्ट के सब्सक्राइबर्स के लिये आने वाले महीनों में सचमुच किफायती दामों पर कंटेन्ट का एक बड़ा लाइन–अप होगा। बेहद अपेक्षित इन टाइटल्स में शामिल हैं बड़े मियां छोटे मियां, पुष्पा 2, सिंघम अगेन, मैदान, जिगरा, वेलकम टू द जंगल और स्त्री 2, आदि। हॉलीवुड मूवी लाइनअप में भी काफी प्रतीक्षित टाइटल्स हैं।

महिला एवं पुरुषों के होली गायन का आयोजन किया गया

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। महानगर रामलीला समिति के तत्वावधान में अयोजित एक बृहद महिला एवं पुरुषों के होली गायन का आयोजन संपन्न हुआ। लखनऊ शहर के विभिन्न क्षेत्रों में निवास कर रहे लोगों द्वारा शिरकत की गई। समिति के महासचिव हेम पंत ने बताया कि महिलाओं में पंत नगर से पिंकी लोहनी और हेमा डोलियां के दल, कल्याण पुर से दीपा बिष्ट, गीता सत्यवली, लीला जोशी के दल, विकासनगर से नंदा रावत के दल इंद्रा नगर से दीपा पंत, दीपा मिश्रा, बीना तिवारी, दिप्ती जोशी के दल महानगर से हेमा जोशी, भारती पांडे, भावना लोहनी, चित्रा पांडे, के दल ने अपनी अपनी प्रस्तुतियों से महानगर रामलीला समिति द्वारा आयोजित होली गायन के कार्यक्रम में शमा बांध दी। महिलाओं की होली का शुभारंभ प्रसिद्ध गायिका श्रीमती विमल पंत ने गणेश जी की बंदना से किया। महिलाओ के होली गायन के बीच भाविनी बहुगुणा ने एक शास्त्रीय होली गाकर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। दिनेश पांडे जी के निर्देशन में सरस संगीत सृजन फाउंडेशन के बच्चो ने अपनी दो प्रस्तुतियों देकर सबको रोमांचित कर दिया। उसके बाद पुरुषों की होली आरंभ हुई जिसमें श्री गोपाल जोशी और गिरीश बहुगुणा ने रागनियों पर आधारित होली सुनाई। पहाड़ की पारंपरिक खड़ी होली में सुन्दर

पाल सिंह बिष्ट,किशोर कोठारी, प्रकाश पांडे, के एन पांडे, रमेश उपाध्याय, गोबिंद बोरा, शंकर पांडे, राजेश भट्ट, ब्रिज मोहन जोशी, गोपाल गैलाकोटी, गोकुल उप्रेती, ज्ञान पन्त, वीरेंद्र जोशी, एन सी त्रिपाठी सहित अनेक कलाकारों नेअपनी गायकी से पहाड़ो की याद ताजा कर दी संगीत में मनोज मेहता ने ढोलक पर, दीवाकर राव ने तबले पर संगत की। इस अवसर पर आकाशवाणी के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी प्रतुल जोशी,पर्वतीय महापरिषद के संरक्षक एन .के.उपाध्याय,मुख्य संयोजक ठाकुर सिंह मनराल, अध्यक्ष गणेश चन्द्र जोशी, संयुक्त सचिव एन.के. पाठक, वरिष्ठ कलाकार ख्याली सिंह काड़ाकोटी, आनन्द कपकोटी सहित पर्वतीय महापरिषद के पदाधिकारी एवं उत्तराखंड महापरिषद के अध्यक्ष हरीश चन्द्र पन्त एवं महासचिव भरत बिष्ट अपने पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के साथ कार्यक्रम में मौजूद थे।

सिटी मजिस्ट्रेट की बदसलूकी से आहत भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष की पत्नी की मौत

हरदोई (अम्बरीष कुमार सक्सेना)। विद्याराम वर्मा ने पूरे जीवन तन मन धन से बीजेपी की सेवा की और जिलाध्यक्ष भी रहे, उनके साथ आचार संहिता के नाम पर सिटी मजिस्ट्रेट ने जमकर बदसलूकी की और फर्जी केस में फंसाने की धमकी दी। इस वाक्ये

और पति की खुलेआम बेइज्जती के बाद पत्नी आहत हो गईं और गम में डूबने से उनकी आज मौत हो गई। ज्ञातव्य हो कि विद्याराम वर्मा सहकारी बैंक के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। मामला शनिवार का है जब लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होते ही प्रशासन होर्डिंग, बैनर उतरवाने में जुट गया। उसी बीच भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा के लखनऊ रोड स्थित आवास के बाहर उनके नाम का बोर्ड लगा हुआ था। सिटी मजिस्ट्रेट की अगुवाई में चल रही नगर पालिका परिषद की टीम ने उनका बोर्ड उखाड़ लिया। इसका पता होने पर श्री वर्मा घर से बाहर निकले और अपने नाम का बोर्ड उखाड़ने की वजह पूछी, जिस पर सिटी मजिस्ट्रेट प्रशांत तिवारी इतने लाल हो गए कि उन्होंने न सिर्फ भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष को खरी–खोटी सुनाई बल्कि उनके खिलाफ केस दर्ज करने की धमकी तक दे डाली। जिसके बाद पति की खुलेआम बेज्जती के कारण पूर्व जिलाध्यक्ष की पत्नी लता वर्मा दुखी हो गईं और भाजपा के लिए सारी जिंदगी जूझने वाले अपने पति से हुए गलत व्यव्हार को वो बर्दाश्त नहीं कर सकीं और सदमे में उनकी रविवार को मौत हो गई। वहीं इसका पता होते ही जिले भर के भाजपाईयों में शोक छा गया। सिटी मजिस्ट्रेट के तानाशाही वाले रवैए की सर्वत्र चर्चा हो रही है।

नाम का बोर्ड उखाड़ ले जाने के मामले में भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा और सिटी मजिस्ट्रेट के बीच हुई नोंकझोंक का वीडियो वायरल हो रहा है। उस वीडियो में सिटी मजिस्ट्रेट भाजपा नेता के ऊपर केस दर्ज कराने की धमकी देते हुए देखे जा सकते। हालांकि श्री वर्मा अपनी बात कह रहे है,लेकिन आचार संहिता की अकड़ में चूर सिटी मजिस्ट्रेट उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं दिखाई दिए।

भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने सिटी मजिस्ट्रेट के विरुद्ध खोला मोर्चा

आज लता वर्मा की अर्थी लेकर भाजपाइयों ने किया हरदोई लखनऊ रोड जाम

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना) भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने अहंकारी,निरंकुश,तानाशाह सिटी मजिस्ट्रेट के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है।पूर्व अध्यक्ष विद्याराम वर्मा की पत्नी की मौत के बाद भाजपा नेताओं में आक्रोश उत्पन्न हो गया है।भाजपाइयों सड़क पर बैठकर विरोध जताया।सिटी मजिस्ट्रेट द्वारा बीजेपी के वरिष्ठ नेता से बदसलूकी करने पर आहत पत्नी ने रविवार को दम तोड़ दिया था। नगर मजिस्ट्रेट को तत्काल हटाने की मांग को लेकर लखनऊ मार्ग पर भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा के आवास के बाहर भारी तादात में बीजेपी नेता सड़क जाम कर विरोध जता रहे हैं। आचार संहिता लागू होने के बाद अधिकारी किस तरह निरंकुश होकर कार्रवाई कर रहे हैं,इसका नजारा बीच शहर में देखने को मिला। होर्डिग बैनर हटवा रहे सिटी मजिस्ट्रेट भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा के नाम का बोर्ड भी उखाड़ ले गए। इतना ही नहीं उन्होने पूर्व जिलाध्यक्ष के साथ जो बदसुलूकी की,उसके सदमें में पूर्व जिलाध्यक्ष की पत्नी की मौत हो गई। पहले दिन तो समूची भाजपा सन्नाटे में रही, लेकिन मीडिया में सुर्खियों में आने के बाद सोमवार को एका–एक भाजपा में उबाल आ गया। सांसद जयप्रकाश के साथ तमाम भाजपाई लखनऊ रोड पर आ गए और वहीं धरने पर बैठ गए। सिटी मजिस्ट्रेट के खिलाफ दो घंटे से खूब नारेबाजी की जा रही है। आचार संहिता लगने के बाद बोर्ड हटाने के दौरान सिटी मजिस्ट्रेट ने पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा के नाम का बोर्ड उखड़वा दिया,इतना ही नहीं उन्होंने विरोध करने पर श्री वर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने तक की धमकी दे डाली। उनकी पत्नी लता वर्मा अपने पति की इस तरह हुई बेइज्जती को बर्दाश्त नहीं कर सकी और इस सदमे में उनकी मौत हो गई। श्री वर्मा की अपनी सरकार में इस तरह हुई बेइज्जती को मीडिया ने सुर्खियों में उछाला,उसके बाद प्रशासन ने बोर्ड उनके आवास पर पहुंचा दिया लेकिन कोई भी अधिकारी वहां पर ना तो शोक व्यक्त करने गया और ना ही किसी ने घटना के बारे में कोई वार्ता की।प्रशासनिक तानाशाही से नाराज होकर सोमवार को भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन, सांसद जयप्रकाश ,नगर पालिका अध्यक्ष सुखसागर मिश्र, पूर्व जिलाध्यक्ष राजीव रंजन मिश्र, पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा राम बहादुर सिंह पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा रामकिशोर गुप्ता, पूर्व सांसद अंशुल वर्मा, विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत उपाध्यक्ष हर्ष वर्धन सिंह,वरिष्ठ अधिवक्ता भाजपा नेता रामौतार शुक्ला, नरेन्द्र पाल सिंह सोनू, गौ रक्षा प्रकोष्ठ के सुनील शुक्ला सहित सैकड़ों भाजपाई हरदोई लखनऊ मार्ग पर इकट्ठा हो गए और उन्होंने जाम लगा दिया। भाजपाइयों का कहना था कि ऐसे अधिकारी को पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। भाजपाइयों ने प्रशासन की तानाशाही के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया।समाचार लिखे जाने तक भाजपाई धरने पर बैठे हुए हैं हरदोई लखनऊ मार्ग पर सैकड़ो का फिल्म सैकड़ो गाड़ियों का काफिला जाम में फंसा हुआ है। पुलिस मौके पर मौजूद है।एडीएम प्रियंका सिंह और एएसपी पश्चिमी एमपी सिंह ने वहां पहुंचकर शाम पांच बजे तक कार्यवाई का भरोसा दिया है। भाजपा के जिलाध्यक्ष और सहकारी बैंक के अध्यक्ष रह चुके विद्याराम वर्मा लोकतंत्र सेनानी भी है। उनके साथ हुए इस तरह के बर्ताव से भाजपा सहित आम जनता में सिटी मजिस्ट्रेट के प्रति असंतोष है।

सपा ने प्रशासन की कार्यशैली को बताया तानाशाह, भाजपा नेता से दुर्व्यवहार पर उठाये सवाल

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना) सपा के वरिष्ठ नेताओं ने आज सामूहिक प्रेसवार्ता में प्रशासन की कार्यशैली पर जमकर निशाना साधा। पूर्व अध्यक्ष पदमराग सिंह यादव पम्मू एवं जितेन्द्र वर्मा जीतू ने पत्रकारों से कहा भाजपा के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याराम वर्मा की पत्नी के निधन पर शोक व्यक्त करता हूँ एवं श्री वर्मा के साथ प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा चुनाव आचार संहिता के पालन के नाम पर जो शर्मनाक दुर्व्यवहार किया गया एवं इस दुर्व्यवहार के चलते वर्मा जी की पत्नी को गहरा मानसिक आघात पहुंचा जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो गई उसकी घोर निन्दा व कड़ी भर्तसना करता हूँ। यह घटना पूरे जनपद के राजनैतिक वातावरण की आज तक की सबसे शर्मनाक व निन्दनीय है। सवाल अब इस बात का है कि श्री वर्मा के साथ हुए प्रशासनिक दुर्व्यवहार व उनकी मौत का जिम्मेदार कौन है? क्या दोषियों के खिलाफ कार्यवाही होगी सजा मिलेगी या नहीं? ये घटना किसी सामान्य नागरिक के साथ नही बल्कि समाज के एक बेहद सम्मानजनक वरिष्ठ नागरिक एवं सत्तारूढ दल के वरिष्ठ नेता व पूरा जीवन समाज की सेवा में लगाने वाले बेदाग ईमानदार छवि के वरिष्ठ भाजपा नेता के साथ हुई इसलिए और भी निन्दनीय है। हरदोई के प्रशासनिक अधिकारी बेलगाम हो चुके है सरकार का अफसरशाही पर कोई नियन्त्रण नहीं रह गया है ऐसा लगता है चुनाव आचार संहिता नही बल्कि आपातकाल घोषित हुआ हो। कल मैं जब उनके घर शोक सम्वेदना व्यक्त करने पहुंचा तो देखा बी० जे०पी० व आर०एस०एस० के बड़े–बड़े नेता फोन पर वर्मा जी से कहते सुनाई पड़ रहे थे कि आपके साथ गलत हुआ बहुत दुःख हुआ पर किसे ने ये न कहा कि मैं जिम्मेदार अधिकारी व कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही करवाऊंगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि बी० जे०पी० नेता जिलाधिकारी सहित अन्य अधिकारियों से डरते है या फिर मिलकर लूट घसोट व दलाली में संलिप्त होगें तभी दबे हुए है। जिस सरकार व दल का प्रशासन पर नियन्त्रण न हो और अपने ही दल के कार्यकर्ता के मान सम्मान को बचा न सके उसे गध्दी पर बैठने का हक नहीं। जिस तरह वर्मा जी वीडियों में बार–बार रो रो कह रहे है कि डी०एम० ने फोन तक न उठाया, ये कोई नही बात नहीं जिलाधिकारी अपने पद के घमण्ड में सत्ता की चाटुकारिता के चलते हिटलरशाही पर आमादा है, सरकारी सुग नम्बर सरकार ने जनता की व जन प्रतिनिधियों की समस्या सुनने के लिए दिया गया वो मोबाईल तो मात्र ओ०एस०डी०, डी०एम० के हाथ की शोभा बना रहता जब फोन मिलाओ हर समय एक ही जबाव डी०एम० साहब मीटिंग में है सूचना दे देगें। जिलाधिकारी हरदोई, 31 लोकसभा क्षेत्र के रिर्टनिग आफीसर भी है मुख्य विपक्षी दल की घोषित प्रत्याशी श्रीमती ऊषा वर्मा जी का विषम से विषम स्थिति में भी फोन से बात न हो पाती ये हाल है भाजपा सरकार के जनसेवको का। अभी पिछले कुछ दिन पहले एक और उदाहरण सामने आया कि थाना हरपालपुर के ग्राम सेमरिया के 28 लोगों पर अपने विकास की मांग करने पर आपराधिक मुकदमें दर्ज कर दिये। इस प्रकरण में समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि मण्डल को जिलाधिकारी ने आश्वस्त किया था कि ग्राम वासियों पर कोई पुलिसिया अत्याचार न होगा पर रोज ही कोई न पुलिसकर्मी सेमरिया गांव जाकर डराने धमकाने का काम कर रहा। ऐसी घटनाओं के दो ही कारण हो सकते या तो भाजपा सरकार जनता के साथ–साथ अफसरों का भी शोषण अत्याचार कर रहे जिससे वे अवसादग्रस्त होकर खिसिया कर जनता व राजनैतिक व्यक्तियों का शोषण कर रहें या फिर सरकार के मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री को वचन दिया है कि प्रशासनिक मशीनरी का दुरपयोग कर बी० जे०पी० को चुनाव जितवा देगें। इसलिए भाजपना के बड़े नेता अपने ही कार्यकर्ता का अपमान सह रहे चुप चाप बैठ कर सह रहे है। समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ता चुप नहीं बैठेगें जहां कही शोषण व अत्याचार होगा उसके खिलाफ आवाज उठायेगें एवं शोषित के साथ संघर्ष करेगें। समाजवादी पार्टी सदा से अन्याय व अत्याचार के खिलाफ सघर्ष करने वाली पार्टी है अभी तक हम लोग आम जनमानस किसानों, नौजवानों, महिलाओं एवं अपने कार्यकर्ताओं के लिए सघर्ष करती रही पर अब लगता है अपने मुख्य विरोधी दल भाजपा के कार्यकर्ताओं व नेताओं के मान सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा भी समाजवादी पार्टी को ही करनी पड़ेगी।

शिक्षिकाओं के समस्याओं के लिए संगठन अपने दायित्व का निर्वहन करेगी – जिलाध्यक्ष

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश महिला शिक्षक संघ (वूमेन टीचर्स एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश)के गोरखपुर इकाई की बैठक गोलघर में जिलाध्यक्ष आकांक्षा सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई , जिसमें महिला शिक्षकों के समस्याओं पर चर्चा की गई तथा निराकरण के लिए रणनीति बनाई गई।

जिलाध्यक्ष आकांक्षा सिंह ने कहा कि शिक्षा विभाग में कार्यरत महिला शिक्षक के लिए संगठन हमेशा खड़ा रहेगा।

कार्यरत शिक्षिकाओं की कठिनाइयां दूर करने के लिए संबंधित व उच्चाधिकारियों को अवगत कराकर निराकरण कराया जायेगा। उत्पीड़न व दुर्व्यवहार सहन नहीं किया जायेगा। शिक्षिकाओं के समस्याओं के लिए संगठन अपने दायित्व का निर्वहन करेगी।बैठक में वरिष्ठ उपाध्यक्ष रजनी श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष किरन लता मिश्र, प्रीति श्रीवास्तव, ज्योति शाही, ममता गिरी, नीतू यादव, बबिता वर्मा, किरण यादव, मीडिया प्रभारी पुष्प लता मौर्य सहित पदाधिकारी व शिक्षिकाएं मौजूद रहीं।

मृदुभाषी अधिवक्ता व पत्रकार

संजय श्रीवास्तव पंच तत्व में विलीन

अयोध्या। मृदुभाषी अधिवक्ता व पत्रकार संजय श्रीवास्तव की आसामयिक मौत शुक्रवार की शाम को उनके निवास स्थान अश्वनीपुरम कालोनी में हो गई। इस दुःखद समाचार को सुनते ही पत्रकारों, अधिवक्ताओ व स्थानीय लोगों में शोक की लहर दौड़ गई। उनका दाह संस्कार जमथरा घाट पर गमगीन माहौल में किया गया। जहां पर उनके बड़े पुत्र अंकित श्रीवास्तव ने उन्हें मुखाग्नि दिया।इस मौके पर कालोनी वासियों के अलावा भारी संख्या में अधिवक्ता, पत्रकार, चिकित्सक, अश्वनीपुरम वार्ड पार्षद जगत नारायण यादव सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

बहुमंजिला बिल्डिंग से गिरकर यातायात सिपाही की मौत

अयोध्या। रविवार की शाम नौ बजे यातायात विभाग में तैनात 37 वर्षीय सिपाही देवेंद्र पाल सिंह की मौत पुलिस लाइन स्थित परिसर में एसएसपी कार्यालय के समीप आठ बहुमंजिला बिल्डिंग से गिरकर हो गई। जिसकी लाश बहु मंजिला बिल्डिंग के समीप स्थित हाउस पाइप के पास मिली।इसकी भनक लगते ही पुलिसकर्मियों में हड़कंप मच गया।इस संबंध में यातायात निरीक्षक अयोध्या अभिमन्यु शुक्ला ने बताया कि मृतक सिपाही देवेंद्र पाल सिंह मूल रूप से अलीगढ़ जिले के थाना खैर निवासी तकीपुर का था।जिसकी तैनाती फिरोजाबाद जिले में थी।जो यहां पर फरवरी माह से ड्यूटी पर तैनात था।उन्होंने बताया कि उक्त सिपाही एक दो दिन से गायब थाघ्।जिसकी लाश रविवार की शाम नौ बजे आठ मंजिली बिल्डिंग के समीप हाउस पाइप से मिली। उन्होंने बताया कि कि उक्त सिपाही की मौत संभवतः आठ मंजिला इमारत से गिरकर हो सकती है। फिलहाल उक्त सिपाही का पोस्टमार्टम कराकर शव को उसके परिजनों को सौंप दिया गया।

निखिल अग्रवाल की प्रेरणा से अंकिता अग्रवाल बनी महिला सशक्तिकरण की मिसाल

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। अवध क्लार्क होटल में चल रही दो दिवसीय प्रदर्शनी में कोफेको कंपनी के स्टॉल पर अंकिता अग्रवाल ने बताया कि कोफेको एक नेचुरल स्किन केयर ब्रांड है। सभी प्रोडक्ट केमिकल फ्री, सल्फेट फ्री, पैराबेन फ्री, एलएलएस फ्री हैं। क्वालिटी एवं उचित मूल्य के लिए कंपनी प्रतिबद्ध है ग्राहकों को प्रोडक्ट ऑनलाइन वेबसाइट पर उपलब्ध है।साथ ही इनको अमेजॉन, फ्लिपकार्ट, टाटा 1उह और जिओमार्ट से भी खरीदा जा सकता है। निखिल अग्रवाल ने बताया कि पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाते हुए अंकिता अग्रवाल ने कुछ अलग करने की सोची। 2023 में कंपनी की शुरुआत की, परिवार के सहयोग से कंपनी दिनों दिन आगे बढ़ रही है।

लखनऊ बैंकर्स क्लब के द्वारा बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन किया गया

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। लखनऊ बैंकर्स क्लब के द्वारा बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन के डी सिंह बाबू स्टेडियम में किया गया जिसका उद्घाटन रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बालू केंचप्पा के द्वारा किया गया। इस टूर्नामेंट में विभिन्न सदस्य बैंकों ने सहभागिता की एवं कांटे की टक्कर में सिंगल्स का खिताब पीएनबी बैंक एवं डबल्स का खिताब बर्ड इंस्टीट्यूट लखनऊ ने जीता। इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य महाप्रबंधक शरद स.चांडक, केनरा बैंक के महाप्रबंधक आलोक कुमार अग्रवाल, पीएनबी के जोनल मैनेजर मृत्युंजय के अतिरिक्त अन्य बैंकों के जोनल हेड्स, महा प्रबंधक गण एवं अधिकारी गण उपस्थित रहे।

फीनिक्स पलासियो महिला सम्मान और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए मना रहा है विमेंस मार्च

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। फीनिक्स पलासियो महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करने के लिए मार्च के महीने को विमेंस मार्च के रूप में मना रहा है। इस विमेंस मार्च में फीनिक्स पलासियो ने महिलाओं के लिए 1 मार्च आयोजित कियाशुरू से होने वाला कैंपेन है, जो 31 मार्च तक चलेगा। इस कैंपेन के तहत 15000 रुपये की खरीदारी पर 4500 रुपये मूल्य तक का निश्चित उपहार और 75000 रुपये की खरीदारी पर आगरा के कोर्टयार्ड मैरियट में निश्चित स्टेकेशन का उपहार दिया जा रहा है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह कैंपेन बी योर ओन बॉसष थीम पर आधारित है। फीनिक्स मिल्स के सीनियर सेंटर डायरेक्टर श्री संजीव सरीन ने बताया, ष्यह कैंपेन महिलाओं की उपलब्धियों और योगदान के लिए हमारी सराहना और समर्थन प्रदर्शित करने का एक प्रयास है। हमारा उद्देश्य महिला ग्राहकों के लिए एक यादगार खरीदारी का अनुभव प्रदान करना है।

प्रसिद्ध कलाकार व भजन गायिका स्वीटी गुप्ता ने किया रामलला का दर्शन पूजन

रामनगरी का हो रहा चहुंमुखी विकास – स्वीटी गुप्ता

(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ)

अयोध्या।प्राण प्रतिष्ठा के बाद से राम नगरी में भारी संख्या में श्रद्धालुओं का आवाजाही बना हुआ है।राम नगरी में आने वाले श्रद्धालुओं को अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन, अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन का विकास,प्रमुख महानगरों को जोड़ने वाली हवाई जहाज का आवागमन,बंदे भारत ट्रेनें,ई– बसों का संचालन सहित अन्य प्रमुख सुविधाएं को मिल रही है।यह बातें प्रसिद्ध भजन गायिका व कलाकार स्वीटी गुप्ता ने आज राम मंदिर परिसर में जाकर रामलला, हनुमान गढ़ी जाकर दर्शन पूजन के बाद एक खास मुलाकात में कहीं।प्रभु श्री राम मेरे रोम रोम में बसे हुए हैं उन्होंने कहा कि आज उनका सपना पूरा हो गया जब वे वर्ष 2020 मे अयोध्या की रामलीला में माता सीता की भूमिका निभाने आयी थी उस समय उन्होंने रामलला को जंगल व टेंट में देखकर काफी दुःख हुआ था।वे यही सोच रही थी कि स्वयं राजा राम जंगल में स्थित टेंट में विराजमान हैं।लेकिन आज उन्होंने रामलला को दिव्य,भव्य व अलौकिक मंदिर में विराजमान देखकर उन्हें काफी खुशी हुई। उन्होंने बताया कि राम मंदिर निर्माण से राम नगरी का चहुंमुखी विकास हो रहा है। राम पथ, धर्म पथ व भक्ति पथ की बात ही कुछ और है। उन्होंने बताया कि आज से चार साल पहले की अयोध्या और इस समय की अयोध्या में जमीन आसमान का अंतर है। उन्होंने बताया कि रामलला का दर्शन करने आने वाले श्रद्धालुओं की वजह से अयोध्या की रोजगार में भी बढ़ोतरी हुई है।

दीपोत्सव व अयोध्या की रामलीला के साथ साथ रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के दिन से अयोध्या की महिमा का गुणगान समूचे विश्व में हो रही है।बताते चलें कि भजन गायिका व कलाकार स्वीटी गुप्ता वर्ष 2020 तथा 2021 में लगातार अयोध्या की रामलीला में माता सीता की भूमिका में नजर आई थीं। वही वर्ष 2023 दिल्ली की प्रसिद्ध लवकुश की रामलीला में भी माता सीता की भूमिका निभाई थी।वही इसी वर्ष अभी कुछ दिन पहले एक कार्यक्रम में वे दुबई गई थी।उन्होंने बताया कि कलाकार अपने कला के माध्यम से समाज को आगे बढ़ाने का काम करता है वही भजन से व्यक्ति को अंदर से शांति व ईश्वर की प्राप्ति होती है।

पत्रकारों का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं – सौरभ कुमार

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। हुसैनगंज स्थित दिलीप होटल के सभागार में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक मैं अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। गडवार – बलिया में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के संस्थापक स्वर्गीय बाबू बालेश्वर लाल जी की प्रतिमा स्थापित करने स्मारिका का प्रकाशन व विमोचन के संबंध में वृहद चर्चा कर रुप रेखा तैयार की गई। यह जानकारी देते हुए संगठन के प्रांतीय महासचिव डॉक्टर कृष्ण गोपाल गुप्ता ने बताया कि लोकसभा चुनाव के बाद गडवार कस्बे में संगठन का विराट क्रांति सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। बैठक में प्रयागराज टोल प्लाजा की घटना का जिक्र करते हुए प्रदेश अध्यक्ष सौरभ ने अपना आक्रोश व्यक्त किया और उन्होंने कहा पत्रकारों का उत्पीड़न किसी कीमत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और शीघ्र टोल प्लाजा की घटना को लेकर एक आंदोलन की तैयारी की जाएगी।दोषी टोल प्लाजा कर्मियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग शासन से की जाएगी। प्रदेश महासचिव महेंद्रनाथ सिंह सदस्यता के संबंध में विस्तार से चर्चा की वह कहां ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन एक ऊर्जावान लोगों का संगठन है पत्रकारों की लड़ाई संगठन बड़ी मजबूती से लड़ने का काम करेगा। प्रदेश उपाध्यक्ष श्रवण कुमार द्विवेदी जी ने कहा गडवार – बलिया में संस्थापक बाबू बालेश्वर लाल जी की प्रतिमा का अनावरण व स्मारिका का विमोचन बहुत ही भव्य तरीके से किया जाएगा और यह अब तक का सबसे बड़ा कार्यक्रम होगा। प्रदेश उपाध्यक्ष कप्तान वीरेंद्र सिंह ने कहा कि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जनक बाबू बालेश्वर लाल जी ने जो पौधा लगाया था वह आज बट वृक्ष का रूप ले चुका है और ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन प्रदेश का नहीं देश का सबसे बड़ा संगठन है जो निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। प्रदेश संरक्षक विनय विनीत ने कहा कि संस्थापक बाबू बालेश्वर लाल जी ने ग्रामीण पत्रकारों की समस्याओं को जाना और समझा और ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की स्थापना की उन्होंने पत्रकारिता के बारे में उन्होंने बारीकी से जानकारी देते हुए बताया कि शीघ्र ही एक पत्रकारों के लिए प्रशिक्षण परक कार्यशाला का आयोजन शीघ्र ही किया जाएगा। बैठक में अजय कुमार भाटिया प्रदेश सदस्य , डॉ विनय कुमार सिंह संस्थापक सदस्य, अजय गुप्ता प्रदेश सचिव, छोटेलाल चौधरी प्रदेश कोषाध्यक्ष, अरविंद दुबे कार्यकारिणी सदस्य, अभिनंदन जैन प्रदेश मीडिया प्रभारी, लखनऊ मंडल के उपाध्यक्ष अमित पांडेय, जितेंद्र सिंह, डॉ नरेश पाल सिंह, नरेश भास्कर, शालिगराम पांडे, शंभू नाथ पुरोहित, वीरभद्र प्रताप अजय मीरजापुर, सिंह ,सौरभ कुमार त्रिपाठी, प्रदीप कुमार राय ,मनोज त्रिपाठी ,अजय प्रजापति, आचार्य रामू लाल पाण्डेय ,अभिषेक श्रीवास्तव, बृजभूषण उपाध्याय ,जयप्रकाश गोविंद राव, पोहरी शरण राय, हरिशचंद्र मिश्रा, अभिनंदन जैन, राकेश कुमार सेन, डां बी बी गौर ,हरिशंकर श्रीवास्तव ,एस पी मिश्रा, कुंवर दिवाकर सिंह, विवेक कुमार मिश्रा ,आलोक श्रीवास्तव ,अवधेश त्रिपाठी, प्रदीप तिवारी, राकेश गिरी, राम चीज निषाद, देववक्स वर्मा, चंद्रेश त्रिवेदी , सुदीप मिश्रा, नितेश अग्रवाल ,विवेक तिवारी, राजकुमार यादव , सुशील कुमार तिवारी, अवनीश कुमार ,अनूप सिंह चौहान, नारायण प्रताप सिंह, कृष्ण बिहारी मिश्रा, संजीव सक्सेना, रामसुंदर यादव एडवोकेट, अमृतलाल अग्रहरि, शैलेश कुमार उपाध्याय, अनिल गोविंद, सुधाकर मिश्रा, परमेश्वर दयाल, गिरीश उपाध्याय, आर्यावर्त पुरोहित, सुशील कुमार सिंह, आशीष त्रिवेदी, आनंद प्रताप सिंह, धीरेंद्र श्रीवास्तव, संतोष शुक्ला, उमेश चंद्र श्रीवास्तव, राजेश अग्रहरी, सुयरश वाजपेई, अमित तिवारी, सहित कई पत्रकार साथी उपस्थित रहे।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 – 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI सन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R/-1
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।